

भारत चारत चरकार शास्ता जीस्राज विज्ञान विभाग पृथ्वी विज्ञान मंत्राजय, प्रावेशिक मीसम केन्द्र, हवाई अड्डा, नागपुर - 440 005.

1

# गणतंत्र दिवस 2020



# ऋतुरंग

(प्रादेशिक मौसम केन्द्र,नागपुर की गृह पत्रिका )

# प्रमुख संरक्षक

*एम. एल. साहू* उपमहानिदेशक तथा वैज्ञानिक – एफ प्रादेशिक मौसम केन्द्र, नागपुर

#### संरक्षक

जे. आर. प्रसाद वैज्ञानिक - ई ,प्रा.मौ.कें.नागपुर

#### संपादक

श्रीमती शांता उन्नीकृष्णन, वरिष्ठ अनुवादक

# सहयोगी सदस्य

- 1. श्री.एस.एन.बिद्यांता, मौ.वि-ए
- 2. श्रीमती संगीता चक्रवर्ती, मौ.वि.-ए
- 3. श्रीमती रीना सुरपाम. मौ.वि.-ए
- 4. श्री. एस. ए. पवार, सहायक.
- 5. श्री. एम. आर. कान्होलकर, वै. स.

#### पत्र व्यवहार का पता

संपादक- ऋतुरंग, प्रादेशिक मौसम केंद्र, हवाई अड्डा, नागपुर - 440005

( इस अंक में प्रकाशित रचनाओं से संपादक मंडल सहमत हो अनिवार्य नहीं एवं रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं जिम्मेदार है।)

# अनुक्रमणिका

अ. क्र.	कविता / लेख / रिपोर्ट	पृ. क्र.
1	राष्ट्रीय एकता का सूत्र-हिंदी भाषा -ए.एम.भट्ट,मौ.वि.अ,मौ.का. अंबिकापुर	11
2	कोशिश करना हक है अपना - राहुल यादव,वै.स. मौ. का. बिलासपुर	17
3	वर्षा का आगमन - मीनू मीणा, वै.स.	18
4	दफ्तर मेरा,एक परिवार – डॉ.रविंद्र आकरे, मौ.वि. 'अ'.	19
5	अनुवाद भाषाओं के बीच संप्रेषण प्रक्रिया है -शांता उन्नीकृष्णन,वरिष्ठ	20
	अनुवादक	
6	जिंदगी की किताब – जतिन कुमार, आशुलिपिक ।।	26
7	विकास के नाम पर प्राकृतिक संतुलन से खेलता मानव – रूबी वर्मा, वै.स.	28
8	हिंदी भाषा का सामाजिक एवं वैज्ञानिक पहलू ,दीपिका कटारा, वै.स.	30
9	विकास के नाम पर प्राकृतिक संतुलन से खेलता मानव, - सोनिका, वै.स.	33
10	मौसम जलवायु और सौर उर्जा – ए.वी.गोडे,मौ.वि.बी	36
11	दिल्ली की हवा की बदहाली - चैन सिंह वर्मा, वै.स.	40
12	बचपन की यादें – श्रेष्ठ गौतम ,वै.स.	41
13	एक बादल – अमित मेहरा, वै.स.	43
14	कचरे का निबटान,खाद का निर्माण – जी.एम.शहारे, मौ.वि.ए	44
15	हिंदी भाषा – ए.एम.भट्ट, मौ.वि.ए, मौ.का.अंबिकापुर	47
16	हिंदी दिवस का महत्व – कार्तिक गोवर्धन वनवे, वै.स., मौ.का.अकोला	48
17	हिन्दी पखवाडा रिपोर्ट – प्रा.मौ.के.नागपुर	49
18	अधीनस्थ कार्यालयों की हिंदी पखवाडा रिपोर्ट	57
19	विशेष खबर	68





महानिदेशक भारत मौसम विज्ञान विभाग मौसम भवन, लोदी रोड नई दिल्ली- 110003

# संदेश

मुझे यह जानकर अपार प्रसन्नता हो रही है कि प्रा.मौ.के.नागपुर गृह पत्रिका ऋतुरंग का छठवाँ अंक प्रकाशित कर रहे है।

गृह पत्रिका के माध्यम से अधिकारियों, कर्मचारियों में छिपी सृजनात्मक प्रतिभा उजागर करने का यह एक सुअवसर है तथा हिंदी के प्रचार-प्रसार में गति लाने के लिए पत्रिका एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। मुझे विश्वास है कि पत्रिका में साहित्यिक एवं ज्ञानवर्धक सामग्री का समावेश होगा जो विभाग के कार्मिकों को अपना दैनिक कार्य हिन्दी में करने के लिए प्रेरित करेगा।

प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को मेरी हार्दिक बधाई। पत्रिका के सफल प्रकाशन तथा उज्जवल भविष्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

मृत्युंजय महापात्र)





उपमहानिदेशक प्रादेशिक मौसम केन्द्र नागपुर – 440000

# उपमहानिदेशक महोदय की कलम से

गृह पत्रिका 'ऋतुरंग' के छठवें संस्करण के माध्यम से पुन: आपके सम्मुख उपस्थित होने का अवसर पाकर मैं अत्यंत प्रसन्न हूँ।

भारत सरकार के निर्देशानुसार कार्यालय में कामकाज की भाषा हिन्दी है अत: वार्षिक कार्यक्रमानुसार कार्यों के अनुपालन को सुनिश्चित करने के लिए हमारे द्वारा सतत प्रयास जारी है।

कार्यालय के ऋतुरंग का यह प्रकाशन इस ओर प्रयास का एक महत्वपूर्ण कार्य है। आशा है राजभाषा के प्रचार-प्रसार में सभी का सहयोग मिलता रहेगा

मैं उन सभी रचनाकारों का भी आभार व्यक्त करता हूँ जिनकी रचनाओं ने हमारे इस प्रकाशन को सशक्त एवं रोचक बनाया है। आप सबको मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई।

(एम.एल.साहू)





वैज्ञानिक-ई प्रादेशिक मौसम केंद्र नागपुर- 440005

#### संदेश

भारतीय भाषाओं में हिंदी अपने विपुल शब्द भंडार,अभिव्यक्ति की प्रबल क्षमता और लिपि के वैज्ञानिक स्वरूप के बल पर अपना एक महत्वपूर्ण स्थान बना चुकी है। गृह पत्रिका ऋतुरंग का नियमित प्रकाशन इस निष्ठा कि एक कड़ी है।

कार्यालय में कार्यरत अधिकारियों और कर्मचारियों को ज्ञान-विज्ञान एवं अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए पत्रिका एक सशक्त माध्यम है। आप सभी से और अधीनस्थ कार्यालयों में कार्य कर रहे कार्मिकों से यह आशा करता हूँ कि अपने विचारों और ज्ञानपूर्ण अनुभवों से 'ऋतुरंग' को और अधिक रोचक बनाए।

गृह पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए सभी लेखकों एवं संपादक मंडल को उनके अथक प्रयास के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ।

> ्री आर प्रसाद (जे.आर.प्रसाद)





उपनिदेशक (राजभाषा) भारत मौसम विज्ञान विभाग मौसम भवन, लोदी रोड नई दिल्ली-110003

# संदेश

प्रादेशिक मौसम केंद्र - नागपुर द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका "ऋतुरंग" के नए अंक के प्रकाशन के अवसर पर हृदय प्रफुल्लित हो उठा है। जिस प्रकार बूंद बूंद से घड़ा भरता है, ज्योत से ज्योत जलती है उसी प्रकार कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका "ऋतुरंग" हिंदी के प्रचार प्रसार में दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति कर रही है। हमारे विभाग के "ख" क्षेत्र में स्थित कार्यालय का यह बहुत अच्छा कार्य है। "ऋतुरंग" कार्यालय के अधिकारियों और कर्मचारियों को हिंदी में रचनाएँ लिखने के लिए प्रोत्साहित कर रही है। भारत को एकता के सूत्र में बाँधती हिंदी के बारे में सुब्रहमणियन भारती कहते हैं कि " राष्ट्र की एकता को यदि बनाकर रखा जा सकता है तो उसका माध्यम हिंदी में ही हो सकता है।"

"ऋतुरंग" के नवीन अंक के आगमन पर उपमहानिदेशक श्री एम.एल साहु जी को बहुत बहुत शुभकामनाएँ जिनके मार्गदर्शन में प्रादेशिक मौसम केंद्र- नागपुर में राजभाषा के प्रचार प्रसार में प्रगति हो रही है। मैं संपादन टीम की भी भूरि भूरि प्रशंसा करती हूँ जिनके अथक प्रयास से पत्रिका ने साकार रूप लिया।

एक बार पुनः हार्दिक बधाई।







सहायक निदेशक (राजभाषा) भारत मौसम विज्ञान विभाग मौसम भवन, लोदी रोड नई दिल्ली-110003

#### संदेश

प्रादेशिक मौसम केंद्र-नागपुर "ऋतुरंग" पत्रिका का छठवाँ अंक प्रकाशित कर रहा है। इससे स्पष्ट परिलक्षित होता है कि विभाग में राजभाषा हिंदी में लिखने वालों की कमी नहीं है। जरूरत है तो केवल मार्ग प्रशस्त करने की और कार्मिकों को राजभाषा हिंदी में लिखने के लिए प्रोत्साहित करने की। हमारे विभाग में विज्ञान के क्षेत्र से जुड़े कार्मिकों की अधिकता है और वैज्ञानिक विषयों को सरल हिंदी में लिखने वालों की कमी भी नहीं है। "ऋतुरंग" का यह अंक यही दर्शाता है।

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी के अनुसार " सबको हिंदी सीखनी चाहिए । इसके द्वारा भाव विनिमय में सारे भारत को सुविधा होगी । "

पत्रिका के संरक्षक के मार्गदर्शन में "ऋतुरंग" पत्रिका का छठवाँ अंक सतरंगी छटा बिखेरेगा-----पूर्ण विश्वास है।

राजभाषा हिंदी में लिखते रहें ......

(सरिता जोशी)





मौसम विज्ञानी –ए (प्र.) एवं राजभाषा संपर्क अधिकारी प्रादेशिक मौसम केंद्र नागपुर- 440005

# संदेश

कार्यालय की गृह पत्रिका ऋतुरंग के छठवें अंक का प्रकाशन राजभाषा हिंदी के बढ़ते कदम की ओर एक नया प्रयास है। पत्रिका प्रकाशन का यह उद्देश्य भी सार्थक हो रहा है कि, किमेंयों में हिंदी लिखने के प्रति रूझान पैदा हो रहा है जो निस्संदेह प्रशंसनीय है।

कार्यालय जहाँ वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्रों में उन्नति कर रहा है वहीं राजभाषा के प्रयोग एवं प्रचार-प्रसार में भी काफी उन्नति हो रही है। कर्मियों में अपनी भाषा में लेखन कार्य करने का जो उत्साह पैदा हुआ है, उससे मुझे आशा की किरण नजर आ रही है और सरकारी कामकाज में भी हिन्दी में लिखने की प्रवृत्ति को अवश्य बढ़ावा मिलेगा।

मैं पत्रिका को आकार देने वाले संपादक मंडल तथा सभी रचनाकारों का भी अभिनंदन करना चाहता हूँ जिनके सहभाग से पत्रिका के स्तर व उपयोगिता में वृद्धी हो रही है।

artaumm ...

(एस.एन.बिद्यंता)





# संपादकीय

जब महाराष्ट्र सहित पूरे देशभर में जन्माष्टमी और गणेश उत्सव जैसे त्यौहारों की धूम रहती है ठीक उसी समय देशभर के सरकारी, गैर सरकारी और अन्य महकमों में सितम्बर माह के पूर्वाध में 'राजभाषा हिंदी' के अलंकरण और सौंदर्य गाथा का पर्व भी पूरे हर्ष और उत्साह के साथ मनाया जाता है। विविध साहित्यिक कार्यक्रमों, संगोष्ठियों एवं प्रतियोगिताओं के आयोजन में देश के हर कोने, हर भाषा-विभाषा और विभिन्न संप्रदाय के लोग राष्ट्रीय एकता को जीवंत करते हुए बढ़-चढ़ कर भाग लेते है। पूरब-पश्चिम उत्तर-दक्षिण सभी दिशाओं और प्रान्तों के लोग जब हिंदी पखवाड़ा और हिंदी दिवस के प्रतिस्पर्धाओं में भाग लेकर अपनी चेतना और ज्ञान को हिंदी में प्रस्तुत करते हैं तो हिंदी की वास्तविक एकात्मकता की शक्ति सहज ही परिलक्षित हो जाती है। कार्मिक मित्र, प्रतिभागियों के उत्साह जुनून और हिंदी की शब्दाविलयों में अपने विचारों की अभिव्यक्ति का विश्लेषण करते हुए प्रतीति होती है, कि वास्तव में हिंदी में कार्यों का सम्पादन और प्रस्तुतिकरण कदाचित सहज और सरल है। आवश्यकता सिर्फ इतनी है कि इसके नियमित अभ्यास और प्रयोग को उत्तरोत्तर दिशा बढ़ावा और प्रोत्साहन मिलता रहे।

राजभाषा प्रतिस्पर्धाओं और संगोष्ठियों आदि के आयोजनों के अब सुखद परिणाम आने लगे हैं। अब महसूस होने लगा है कि आने वाले अल्प समय में ही 'राष्ट्रभाषा हिंदी' को उसका गौरव प्राप्त हो जाएगा। लोग बेहिचक अपने

साधक ज्ञान के साथ अपने सभी प्रकार के विचारों को हिंदी में अति सरलता से व्यक्त कर पाएंगे।

भाषा के विकास और प्रचार-प्रसार में पत्रिकाओं की अहम भूमिका है। कार्यालय के विविध कार्यकलापों की जानकारियों को प्रसारित करने में विभागीय पत्रिकाएं एक महत्वपूर्ण माध्यम होती हैं। रचनाकारों के लेख, हमारे प्रेरणा स्रोत होने के साथ हमारा ज्ञान वर्धन भी करते हैं। इसी तरह अखिल भारतीय स्तर पर तकनीकी विषयों पर आयोजित हिंदी संगोष्ठी में कार्यालय एवं अधीनस्थ कार्यालयों के वैज्ञानिकों – अधिकारियों का भाग लेना एवं अपना सारगर्भित प्रस्तुतीकरण देना, यह सिद्ध करता है कि भाषा चाहे कोई हो कार्य करने की क्षमता और चाहत हमारे भीतर होनी चाहिए। विश्व किव गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के वो शब्द स्मरण हो आता है जब उन्होने कहा था मैं अपने आप को उस दिन गौरान्वित अनुभव करूँगा, जब राष्ट्रभाषा हिंदी को उसके अपने देश में उचित सम्मान मिल पाएगा।

राजभाषा हिंदी के ये बढ़ते कदम एकदिन अपनी मंजिल को अवश्य हासिल करेगी। गृह पत्रिका ऋतुरंग राजभाषा हिंदी के बढ़ते चरण का एक परिचायक है जो अपने आप में सूचनाप्रद, ज्ञानवर्धक और प्रेरणास्रोत रचनाओं को लेकर धीरे-धीरे आगे बढ़ रही है। आप सभी रचनाकारों के स्नेह और विश्वास से सींचे जाने पर आनवाले इसके अंक और भी अधिक पुष्पित और पल्लिवत होते जाएंगे, इन्हीं उम्मीदों के साथ ...........

(शांता उन्नीकृष्णन)

# राष्ट्रीय एकता का सूत्र – हिंदी भाषा

ए.एम.भट्ट,मौ.वि.-ए मौ.का.अंबिकापुर

#### प्रस्तावना -

हिंदी सम्पूर्ण भारत की भाषा है। कश्मीर से कन्याकुमारी और गंगा सागर से द्वारिका पुरी तक हिंदी बोली और समझी जाती है। सम्पूर्ण भारत को जब कोई सन्देश देना होता है तब हमें हिंदी का ही सहारा लेना पड़ता है क्योंकि यह बहुसंख्यक वर्ग की भाषा होने के साथ अत्यंत सरल, प्रवाहमयी और लिपि के वैज्ञानिक नियमों की कसौटी पर भी खरी उतरती है यह सम्पूर्ण देश की भावनात्मक एकता एवं अन्य भाषा या बोलियों के साथ सम्बन्ध स्थापित करने में सर्वथा समर्थ है। हिंदी के माध्यम से भारतीय राष्ट्र के संस्कृति की अभिव्यक्ति होती है और यही कारण भी है कि इसमें भारत के देव भाषा संस्कृत की समस्त परम्पराएं सुरक्षित हैं। हिंदी शब्द का उद्गम –

अंग्रेजी पराधीनता से मुक्त होने के बाद भारत के संविधान में हिंदी भाषा को राष्ट्र भाषा का स्थान देकर इसे गौरवान्वित किया गया। हिंदी शब्द का प्रयोग फारस और अरब देशों से माना गया है। हिंदी शब्द का उद्गम संस्कृत के 'सिंधु' शब्द से हुआ माना जाता है। ईरान के लोग 'स' का उच्चारण 'ह' करते हैं, इसलिए 'सिंध' का उच्चारण 'हिन्द' और 'सिन्धु' का उच्चारण 'हिन्दू' होने लगा इसी क्रम में आगे चल कर हिंदी शब्द अस्तित्व में आया। 'हिंदी' शब्द का प्रयोग अमीर खुसरो ने भी किया है। अमीर खुसरो तुर्क थे लेकिन 1317 ईस्वी के आसपास वे भारत में पैदा हुए थे। अमीर खुसरो ने एक बार कहा था – " चुंकी मैं भारत में पैदा हुआ हूँ अतः मैं यहां के भाषा के संबंध में कुछ कहना चाहता हूँ, इस समय यहाँ प्रत्येक प्रदेश में ऐसी विचित्र और स्वतंत्र भाषाएं प्रचलित हैं जिनका एक दूसरे से संबंध नहीं है, ये भाषाएं हैं – सिंधी, लाहौरी, पंजाबी, कश्मीरी, डुगरी, कन्नड़,तिलंग,तिमल और बंगला आदि। हालांकि ये सभी हिंदी की ही उप भाषाएं हैं जो प्राचीन काल से जीवन के सामान्य कार्यों के लिए हर प्रकार से व्यवहार में आती रही हैं। "

#### हिंदी का निर्माण काल -

लगभग 1000 ईस्वी पूर्व भारतीय आम जन की व्यवहार की भाषा मुख्य रूप से पाली प्राकृत और संस्कृत ही माना जाता है जो आगे चल कर अपभ्रंश का स्वरूप पाया। अपभ्रंश का जब क्रमशः विलोप प्रारम्भ हुआ तब जो भाषायी संक्रमण हुआ तब वर्तमान में प्रचलित भारतीय भाषाओं का उदय काल आया। माना जाता है कि हिंदी का जन्म शौरसेनी और अर्धमाग्धी अपभ्रंशों से हुआ जो आगे चल कर आधुनिक आर्यों की भाषा बना। आर्य काल में संस्कृत को भाषाओं की प्रकृति और अन्य भाषाओं को उसकी विकृति के रूप में मान कर संस्कृत को

राष्ट्रभाषा मान लिया गया। इस बात का प्रमाण बाल्मीकि काल में उनकी रचनाओं में मिलता है। बाल्मीकि की रचित रामायण में संस्कृत के दो रूप मिलते हैं - द्विजी और मानुषी। अशोक वाटिका में सीताजी और हनुमान में संवाद की भाषा पूर्णतया मानुषी है। जबकि कतिपय बाल्मीकि रामायण की भाषा द्विजी संस्कृत है। जब हनुमान जी सीताजी की खोज करते हुए अशोक वाटिका पहुँचे तो उनके सामने वार्ता हेतु भाषायी संकट आ खड़ा हुआ। वे सोच में पड़ गए कि यदि वे अपनी बात द्विजी संस्कृत में करते हैं तो सीताजी कहीं उन्हें रावण का मायावी रूप न समझ लें, क्योंकि उस काल में द्विजी संस्कृत विद्वत वर्ग की भाषा थी जबकि सामान्य जन अपने व्यवहार में मानुषी संस्कृत का प्रयोग करता था। हनुमान जी एक साधारण रामदूत हो कर अपने संवाद के लिए मानुषी संस्कृत का ही प्रयोग किया। वास्तव में हनुमान जी द्रविड थे और विद्वान भी। उनकी भाषा हमेशा द्विजी ही रही थी और रावण भी विद्वान था और द्विजी संस्कृत में ही वार्ता करता था अतः सीताजी को कोई संदेह या भ्रम में डाले बिना उन्होंने अपनी वार्ता हेतु मानुषी का व्यवहार किया। इससे पुष्टि होती है उस काल में राष्ट्र की भाषा संस्कृत ही थी। 1000 ईस्वी के आसपास संस्कृत का अपभ्रंश स्वरूप सामने आने लगा जिसमें प्रचुर मात्रा में तत्सम तद्भव और देशज शब्दों का समावेश हो कर हिंदी का जन्म हुआ। वर्तमान हिंदी के विश्लेषण में हम पाते हैं कि हिन्दी में जिस मात्रा में स्थानीय देशी शब्दों को मान्यता दी गयी है उतनी शायद विश्व की किसी भी दूसरी भाषा में नहीं है। हिंदी का शब्द भंडार इतना व्यापक है कि उसमें क्षेत्रीय बोलियों और भाषाओं के पर्यायवाचक और समानार्थक शब्दों के साथ विभिन्न विदेशज शब्दों को भी महत्व प्राप्त है।

#### हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा -

स्वतंत्र भारत की राष्ट्रभाषा क्या हो, इसका समाधान तात्कालिक विद्वानों और राष्ट्र निर्माताओं के लिए चुनौती से कम नहीं थी। भारत जैसे विशाल देश में विभिन्न अनेकता में भाषा की विभिन्नता भी एक है।अनेक देशी विदेशी तथा प्रांतीय समृद्ध भाषाओं में से सर्व ग्राह्य एवं देश को एक सूत्र में बांध कर रख सकने के गुणों में सम्पन्न भाषा की पहचान एक कठिन कार्य रहा है,क्योंकि साहित्य की दृष्टि से अंग्रेजी हिंदी से अधिक समृद्ध भाषा थी तो मराठी, गुजराती, बंगला आदि प्रांतीय भाषाएं अगर हिंदी से श्रेष्ठ नहीं थीं तो कमतर भी नहीं थी। प्राचीन भारत में धार्मिक आग्रह के कारण प्राकृत पाली आदि भाषाओं को राष्ट्रभाषा की पदवी प्राप्त रही है, परन्तु जिन साम्राज्यों के अधीन यह व्यवस्था थी उस राजकीय गौरव के प्रभुत्व की समाप्ति के उन भाषाओं का गौरव भी क्षीण होता चला गया। कालांतर में ये भाषाएं प्राचीन धार्मिक भाषा या प्रांतीय विभाषा के रूप में ही स्वयं को संरक्षित करने में सक्षम हो सकी। इसी तरह हर नवीन सत्ता के साथ उसकी राष्ट्रभाषा का नवीन स्वरूप विकसित होता चला गया। अपनी वर्तमान

राष्ट्रभाषा को जानने के लिए हमें विचार करना होगा कि वह कौन सी विशेषता है जिसने हिंदी को राष्ट्र की भाषा बनाया।

सामान्यतया भारत में राष्ट्रभाषा का पद सदैव मध्य देश की भाषा को मिलता रहा है, क्योंकि स्थानीय लोक हिंदी में कहा जाता है कि – तीन कोस में पानी और छः कोस में बदले बानी। तात्पर्य यह है कि क्षेत्र के विस्तार के साथ बोली और भाषा में क्रमिक रूप से परिवर्तन होता है। जो राष्ट्र के मध्य क्षेत्र में प्रचलित होता है वह वहां के भाषा में क्रमिक रूप से परिवर्तित हो कर राष्ट्र के अंतिम छोर तक तथा पड़ोसी राष्ट्र तक अपने मूल स्वरूप के गुणों के साथ अस्तित्व में रहती है। इसका परिणाम यह होता है कि राष्ट्रभाषा में कही गयी बातें या संदेशों का वहां के राष्ट्रवासी आसानी से समझ जाते हैं। हिंदी सदा से मध्य भारत की भाषा रही है। साहित्यकारों और विद्वतजनों की बात मानें तो हिंदी का जन्म दिल्ली और उत्तर प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्रों में हुआ। वहां से यह पूरे उत्तर भारत, मध्य भारत और पूर्वी भारतीय क्षत्रों तक विस्तार पाती चली गयी। संस्कृत के मूल स्वरूप से जन्मी इस भाषा में अनेकानेक क्षेत्रीय शब्दों के परिमार्जित स्वरूप का समावेश हुआ। देवनागरी लिपि में लेखन और उच्चारण की सरलता के कारण यह जनमानस की प्रमुख भाषा बन गयी। इन्हीं गुणों ने हिंदी को राष्ट्रभाषा बन सकने के सामर्थ्य प्रदान किया।

#### हमारी राष्ट्रीय एकता और हिंदी -

किसी देश की भाषा के संदेश सम्प्रेषण का माध्यम भर नहीं होती, यह संस्कृति वाहक भी होती है। हमें अपने दादी नानी और बुजुर्गों से अनेकानेक कहानियां और घटनाएं सुनने को मिलती हैं चलती रहती हैं। कहने को ये लोक कथाएं हैं पर इनमें सामाजिक एकात्म को कायम रखने की जो शक्ति विद्यमान है वह उपदेश विधा या भाषण विधा की तुलना में कहीं अधिक प्रभावशाली है, आखिर यह अंतर क्यों है ?

हम देखते हैं कि लोक कथा की भाषा जितनी सरल और ग्राह्य होती है साहित्य विधाओं की भाषा उतनी ही क्लिष्ट होती है। यही कारण है कि आजादी के लिए संघर्षरत देशभक्तों ने अपने संदेश का माध्यम सहज एवं सरल रूप में प्रचलित हिंदी को बनाया। वर्तमान संदर्भ में देखें तो हम पाते हैं कि जब किसी धर्मगुरु, विद्वान उपदेशक, व्यापार प्रचारक या जन नेता को जब सम्पूर्ण राष्ट्र को संदेश देने का अवसर आता है तो वे हिंदी का ही प्रयोग करते हैं। पूर्व राष्ट्रपति डॉ जाकिर हुसैन ने हिंदी के संबंध में कहा था – "हमारी राष्ट्रीय एकता का सर्वश्रेष्ठ माध्यम हिंदी है। हम खुश किस्मत हैं कि हमारे पास हिंदी रूपी वह धागा मौजूद है जो देश विदेश के विभिन्न भाषारूपी फूलों को पिरो कर भारत को एक सबल राष्ट्र बनाएगा। "वहीं नेहरू जी के द्वारा हिंदी के लिए व्यक्त विचार थे – "भारत की एकता को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए, इसे

शक्तिशाली राष्ट्र बनाने के लिए एवं आपसी आत्मविश्वास के लिए और संसार के अन्य राष्ट्रों से मधुर सम्बन्ध के लिए हिंदी से अधिक उपयुक्त और कोई भाषा नहीं है।"

हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने में अहिन्दी भाषियों ने जो प्रयास किया है वह शायद हिंदी भाषियों ने नहीं किया। राष्ट्रीय एकता और अखंडता के लिए हिंदी की विशेषता की पहचान कर इसे ऊपर लाने में गुजराती भाषी महात्मा गांधी , बांग्ला भाषी आचार्य केशव चन्द्र सेन , राजाराममोहन रॉय, बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय , रवीन्द्रनाथ टैगोर ,सुभाषचंद्र बोस, मराठी भाषी लोकमान्य तिलक. आचार्य विनोबा भावे डॉ अंबेडकर. पंजाबी भाषी लाला लाजपत राय, तमिल भाषी चक्रवर्ती राजगोपालाचारी आदि के योगदान को विस्मृत करना संभव नहीं है। सन 1875 ईस्वी में केशव चन्द्र सेन ने कहा था - " अगर हम हिंदी को नहीं अपनाएंगे तो राष्ट्र की एकता को नहीं बना पाएंगे। "वहीं 1878 में बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय ने अपने एक वक्तव्य में कहा था "अगर हम भारत की एकता और भारत को विकसित करना चाहते हैं तो हमें हिंदी को अपनाना पड़ेगा। सन 1909 ईस्वी में गांधी जी ने हिन्द स्वराज में लिखा था - "आज आपकी पहली और सबसे बड़ी समाज सेवा यह है कि आप अपनी भाषाओं की ओर मुड़े और हिंदी को राष्ट्र भाषा के पद पर प्रतिष्ठित करें। हर एक पढ़े लिखे हिंदुस्तानी को अपनी भाषा का, हिन्दु को संस्कृत का, मुसलमानों को अरबी का, पारसी को पर्सियन का और सबको हिंदी का ज्ञान होना चाहिए। सारे हिंदुस्तान के लिए तो हिंदी ही होनी चाहिए" अपने एक अन्य वक्तव्य में गांधी जी ने 1917 में कहा था - " भारतीय भाषाओं में सिर्फ हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जिसे राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाया जा सकता है क्योंकि वह अधिकांश भारतीयों द्वारा बोली जाती है, वह समस्त भारत में आर्थिक, धार्मिक और राजनैतिक संपर्क के रूप में प्रयोग के लिए सक्षम है।"

हिंदी में निहित राष्ट्रीय एकता को फलीभूत करने की शक्ति का पहचान करने वाले विद्वानों, साहित्यकारों, मनीषियों एवम जन प्रतिनिधियों की फेहरिस्त इतनी लंबी है कि हमारे शब्द कम पड़ जाएंगे। पर इतना तो कहा ही जा सकता है कि सिर्फ और सिर्फ हिंदी जानने वाला एक व्यक्ति बहुत ही सुगमता से पूरे भारतवर्ष का भ्रमण करके लौट आ सकता है। भारत की भावनात्मक एकता में हिंदी -

सर्वविदित है कि भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है। इस पुण्य भूमि पर विश्व के सभी धर्म सम्प्रदाय के अनुयायियों ने आश्रय पा कर अपना-अपना धर्म लक्ष्य प्राप्त किया है। परंतु ऐसे अनेक अवसर उतपन्न किये गए हैं जिससे कुटिल स्वभाव के समाज विघटनकारी ताकतों ने अपने धर्म के मूल सिद्धांतों से परे जाकर समाज में विद्वेष का बीज बोया है। कई बार धर्म और सम्प्रदाय के नाम पर उत्पन्न कलह जन संहारक रूप में परिणत हुई है। ऐसे कटु परिस्थिति में देश की एकता को पुनः अवलम्बित करने के लिए हर बार हिंदी भाषा माध्यम बनी है। भक्ति काल के

सूफी संतों से लेकर आधुनिक काल के धर्म उपदेशकों तक सभी ने सर्वधर्म समभाव के भारतीय दर्शन के मूल सिद्धांतों के उपदेश के लिए हिंदी का बहुलता से प्रयोग किया है। कबीर, रसखान जायसी, कमाल, शेख फरीद, दादू, बाबरी, बुल्लेशाह आदि प्रेममार्गी मुस्लिम सूफ़ी सन्तों ने अपनी कथा एवं किवता के माध्यम से हिन्दू और मुसलमानों को एक दूसरे के निकट लाने का प्रयास कर जहां धार्मिक सामंजस्य का मार्ग प्रशस्त किया वहीं आधुनिक भारत के जन्मदाता अम्बेडकर, गांधी आदि ने 'हिन्दू मुसलिम सिक्ख ईसाई आपस में सब भाई-भाई ' जैसे संदेश हिंदी में दे कर देश को एक सूत्र में बांधे रखने का मंत्र दिया है। जब हिंदी अपनी समृद्धि को प्राप्त नहीं कर पाई थी शायद तभी हमारे देश के समाज सुधारकों ने इसकी शक्ति को पहचान लिया था। धर्मों में समन्वय के माध्यम से राष्ट्रीय एकता और अखंडता के लिए कबीर दास जी ने कहा था –

साधु ऐसा चाहिए, जैसा सुप सुभाई। सार सार को गहि रहे, थोथा देई उड़ाई।। वहीं तुलसीदास जी का एक विचार उद्धरण के रूप में देखें – जड़ चेतन गुण दोषमय , विश्व कीन्ह करतार। संत हंस पयगृन गहिंह, परिहरि बारि विकार।।

ऐसे अन्यान्य उदाहरण हमारे पास हैं जो हिंदी भाषा में कही ही नहीं गयी बल्कि व्यापक प्रभाव से भारतीय जनमानस को एक शिष्ट समाज में बांध कर रखने में समर्थ रही है। सोहनलाल द्विवेदी की राष्ट्रीय चेतना को जगाने वाली इन शब्दों पर भी एक दृष्टि डाल कर देश के तमाम राष्ट्रवादी हिंदी कवियों को नमन किया जा सकता है –

जननी की जंजीरें बजती, जाग रहे कड़ियों के छाले। सुना रहा हूँ तुम्हें भैरवी, जागो मेरे सोने वालों।

इस तरह हम पाते हैं कि हमारे यहां प्रचलित तमाम भाषाओं में हिंदी में वह शक्ति निहित है जो अपने साहित्य को सामाजिक उन्नति पथ पर अग्रगामी बनाने की ऊर्जा प्रदान करती है। वैसे भी हिंदी साहित्य के मुख्य विशेषताओं में माना गया है कि –

हित साधना करना – "हितं सिन्नहित तत् साहित्यम।" मानव मनोवृत्तियों को तृप्त करना – "सहितं रसेन युक्तम तस्य

<u>भावः साहित्यम।"</u>

मानव मनोवृत्तियों को उन्नत करना – " अवहितं मनसा

<u>महर्षिभी: तत् साहित्यम।"</u>

तात्पर्य यह है कि साहित्य का मुख्य उद्देश्य मानव मात्र का हित साधना करना है और यह कार्य हमारी भाषयी एकता के बिना कदापि सम्भव नहीं है।

#### उपसंहार -

इसमें कोई शक नहीं कि हिंदी समग्र भारतवर्ष के सांस्कृतिक और राजनैतिक एकता का प्रतीक है। जिसने इस शक्ति को पहचाना है वह अपनी पूरी सामर्थ्य के साथ इसके पक्ष में खड़ा है या हम कहें कि उसने राष्ट्रीयता की परिभाषा को पूरी तरह से समझा है। परंतु ऐसे लोगों की भी कमी नहीं है अपने स्वार्थवश हिंदी की उपेक्षा करते हैं। अंग्रेजियत आज भी हमारी एकता में खलल डालती है। अंग्रेजी में बोलना या हिंदी की उपेक्षा करना अपनी शान समझते हैं। अंग्रेजी भाषा का प्रभाव हमारे ऊपर इतना गहरा है कि जब उसे त्यागने का प्रश्न आता है तो हम भयभीत हो जाते हैं कि – क्या होगा ? कैसे काम चलेगा ? अंग्रेजी के जाते ही कहीं हम डूब तो नहीं जाएंगे ? कुछ प्रांतीय भाषाकार यह भी सोचते हैं कहीं उनकी भाषा का नाश न हो जाय ? लेकिन तमाम विरोधों के बाद भी यह प्रमाणित हो चुका है कि राष्ट्र को एक सूत्र में बांध कर रखने की क्षमता सिर्फ हिंदी में ही है क्योंकि इसमें कोई प्रांतीय भाव या वैमनस्य नहीं है। यह साम्प्रदायिकता से कोसों दूर है। इसे सभी प्रकार से सम्पन्न बनाने की आवश्यकता है।

यूनान मिस्र रोमां सब मिट गये जहां से, बात कुछ है ऐसी की हस्ती मिटती नहीं हमारी। जननी की वो थी पहली वाणी जो बनी आज मेरी मातुभाषा, मान बहुत सम्मान बहुत, है स्वजनों के अभिमान की भाषा। कृटिल व्याध के वो निष्ठर पंजे, भारत माँ के चरणों में शिकंजे, भाषा बोली में भेद करा कर, लुटती रही हमारी अभिलाषा। जन जागरण की वो पहली बेला, स्वाधीनता हित रण की बेला। धर्म जाति और भाषा विपुल, भारत माँ हेतु गए सब भूल। हर सपूत लहू से खेल गया, निज भुजाओं का फिर वार किया। नई सुबह फिर आई थी, उषा किरणों में अंगड़ाई थी, स्वाधीन हुई हमारी आशा, हुई स्वतन्त्र फिर हिंदी भाषा। अनेकता में एकता की डोरी समान, हिंदी ही थी देश की प्राण। लोकतंत्र की पोथी में हिंदी न ऊंची मंजिल थी पाई। भारत माता की बनी जो भाषा, जन-जन की होती पूरी आशा। स्वछंद प्रवाहमयी, संस्कृत की बेटी, कभी रही थी देवों की भाषा, आज अक्षय सौंदर्यमयी अति सरल, हिंदी हमारी है राष्ट्रभाषा।

.....

# कोशिश करना हक है अपना

श्री राहुल यादव, वै.स., मौ का बिलासपुर

तूने देखा था एक सपना, कोशिश करना हक है अपना, पता था पथ पर काँटे होंगे, लोग फरेबी ना सहारे होंगे, कदम पर कदम रखना होगा, पथ ये पूरा चलना होगा।

आराम किया है सारी उम्र, अब समय है कोशिश का, हिम्मत ना टूटने देना होगी, खुद को खुद ही सहना होगा।

आज अकेला है भी तो क्या, कल ये सब तेरा होगा, देखने अपने चारों ओर, सोच कैसी थी वो माँ की गोद, जहाँ से उठकर पहला सूरज देखा होगा उसी के लिए कुछ करना होगा।

तूने देखा था एक सपना कोशिश करना हक है अपना।



आप अपना भविष्य नहीं बदल सकते पर आप अपनी आदतें बदल सकते है और निश्चित रूप से आपकी आदतें आपका भविष्य बदल देगी!

- ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

# वर्षा का आगमन

सुश्री मीनू मीणा, वै.स.

वर्षा का मौसम कुछ ऐसे आया घर घर घर संग बदरा लाया। वर्षा का मौसम कुछ ऐसे आया घर घर घर संग बदरा लाया।

नाचते बच्चों को देख वो बचपन याद आया पतनालों के नीचे नहाता देख अपना भी समय याद आया। घुर घुर करता वो मेघों का झुंड देखो रिम झिम करता वो सावन आया। वर्षा का मौसम कुछ ऐसे आया घर घर घर संग बदरा लाया

कूँ कूँ करती कोयल और हवाओं ने भी शोर मचाया टर टर करते मेंढक ने भी दिल का हाल बताया। फुदक रही डाल-डाल चिडिया करते सब किलकारी मेघों के स्वागत में देखो चहु तरफ है तैयारी। वर्षा का मौसम कुछ ऐसे आया घर घर घर संग बदरा लाया

गर्मी से झुलसी धरती को मिली है देखो मंजुल काया खेतों में झूमती फसलों को देख, आज किसान भी मुस्काया। वर्षा का मौसम कुछ ऐसे आया घर घर घर संग बदरा लाया

लहलहाते खेतों को देख, होती हर्ष की हितकारी नव दुल्हन सी सजी धरा को, देख होती है हैरानी। झूम रही है नदिया सारी, करने को वो मनमानी बूंदो की बारात लिए, आयी है देखो ऋतु रानी।

वर्षा का मौसम कुछ ऐसे आया घर घर घर संग बदरा लाया। वर्षा का मौसम कुछ ऐसे आया घर घर घर संग बदरा लाया।



# दफ्तर मेरा, एक परिवार

डॉ. रवींद्र आकरे, मौ.वि.ए

कैसा यह है रिश्ता ... जुड़ा एक भाई जुड़ा एक दोस्त

> क्यों मैं आज कहूँ तुम्हें अलविदा मगर दफ्तर से हुए तुम विदा

इस 'रवी' का तुम्हें साथ रहेगा, उस 'रवि' की दुआ मिलेगा

> 'श्याम'के जीवन में, नहीं होगी 'शाम'

तो 'अंधेरा' का नहीं नाम 'संकट' का क्या काम

> शक्ति दें, करें समस्या का सामना यह है हमारी प्रार्थना

जीवन रहे आपका सदैव 'प्रकाशिच्छा' यही है मेरी शुभकामनाएं

# अनुवाद, भाषाओं के बीच संप्रेषण प्रक्रिया है

#### श्रीमती शांता उन्नीकृष्णन, वरिष्ठ अनुवादक

Climate of Nagpur हिंदी में अनुवादित प्रति 'नागपुर की जलवायु' हिंदी अनुवाद के समय कुछ चुनौतियों का सामना किया गया। किसी अनुवादक के लिए 'अनुवाद' यह विषय इतना आसान नहीं है, जितना की समझा जाता है।

#### अनुवाद का स्वरुप (अपने अनुभव) :-

अनुवाद मूलत: एक भाषिक प्रक्रिया है यह भाषा मनुष्य की अभिव्यक्ति और संप्रेषण की महत्वपूर्ण प्रक्रिया है उदाहरणार्थ -

अंग्रेजी वाक्य : Temperature inside shall be kept at 0-28 degree Celcius and the relative humidity shall be below 70% . टूल्स के माध्यम से ट्रांसलेशन: भीतर का तापमान 0-28 डिग्री सेल्सियस पर रखा जाएगा और सापेक्षिक आईता 70% से नीचे होगी। उपयोगकर्ता को कुछ और अपेक्षित है। नीचे दिए गए वाक्य का अंग्रेजी में रूपांतरण कुछ इस प्रकार होगा। अतः अनुवादक की भूमिका स्पष्ट तौर पर नज़र आ सकती है। भीतर का तापमान 0-28 डिग्री सेल्सियस पर रखा जाना चाहिए और सापेक्ष आईता 70% से कम होनी चाहिए। = The inner temperature should be kept at 0-28 degrees Celsius and the relative humidity should be below 70%.

Should be / shall be का योग्य प्रयोग या कई बार तो यह relative शब्द इस आर्द्रता को रिश्तेदार में बदल देता है, किसी वाक्य को मज़ेदार बना देता है।

#### अनुवाद के उदाहरण –

अंग्रेजी वाक्य : A warm Diwali wish टूल्स के माध्यम से ट्रांसलेशन: दीपावली की गर्म शुभकामनाएं...

Old जो कि एक विश्लेषण है,इसके कुछ उदाहरण जैसे :- Old man, Old friend, 3 years old हो सकते है।

मशीनी अनुवाद के विकल्प – क्रमश: कुछ इस तरह है पुराना आदमी,पुराना मित्र, 3 वर्षीय पुराना हो सकते है।

अब यह मानव तय करेगा कि किसके लिए क्या उपयुक्त है :- जैसे बूढ़ा आदमी , तीन साल पुरानी मित्रता हो सकती है , लेकिन 3 वर्षीय बूढ़ा आदमी सही नहीं है।

अतः अनुवाद, भाषा और संप्रेषण यह विषय को चुनने की प्रेरणा मिलती है।

अनुवाद और भाषा का अंत: संबंध भूमिका तथा अनुवाद प्रक्रिया में भाषा की भूमिका

आधुनिकीकरण के परिप्रेक्ष्य में अनुवाद और संप्रेषण का योगदान है,अनुवाद, विश्व-बंधुत्व को सुदृढ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और विश्व की संस्कृतियों के विकास में इसका महत्वपूर्ण योगदान है।

अनुवाद भौगोलिक सीमाओं को लांघने में सहायक है मानवीय ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न संकल्पनाओं और सिद्धांतों की जानकारी इसके द्वारा पूर्ण किया जा सकता है। अनुवाद सभी देशों की राजनैतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक तथा औद्योगिक प्रगति में उल्लेखनीय भूमिका निभाती है।

भाषाई सीमाओं को पार करने में अनुवाद एक महत्वपूर्ण तत्व है।अनुवाद के माध्यम से मानव में व्याप्त सार्वभौमिक, ऐतिहासिक और सामाजिक एकता के दर्शन होते है, जिसमें भाषाओं के बाहरी भेद के होते हुए भी मानवीय अस्तित्व के समान तत्व का परिचय मिलता है। : -डॉ.कृष्णकुमार गोस्वामी

अनुवादक विचारों एवं भावों का अनुवाद दुसरी भाषा में संप्रेषण के उद्देश्य से ही करते है । अनुवाद के माध्यम से दो भाषाओं के बीच एवं दो से अधिक व्यक्तियों के बीच संपर्क स्थापित होती है।

#### अनुवाद क्या है ?

सामान्य रूप से एक भाषा की सामग्री को दूसरी भाषा में अन्तरित करने को अनुवाद कहा जाता है। लेकिन इस प्रक्रिया के पीछे जो विचार या सिद्धान्त होते है उनकी ओर हमारा ध्यान सहजता से नहीं जाता। अनुवाद के सैद्धांतिक पक्ष को जान लेने पर उसका व्यवहार में उपयोग करना अनुवाद को सफल बना सकती है। अनुवाद कार्य पूर्वकाल से ही होते आ रही है, लेकिन इस प्रक्रिया का सैद्धांतिक विवेचन आधुनिक युग में ही विशेष रूप से हुआ है। नए ज्ञान क्षेत्र में इस प्रक्रिया को स्वीकृति मिल चुकी है और इसका विकास अनुप्रयुक्त अथवा प्रायोगिक भाषा विज्ञान की शाखा के रूप में हुआ है।

'अनुवाद' तत्सम शब्द है यह शब्द अनु+वद् धातु के अनु उपसर्ग लगने से बना है। अर्थात (कहना/बोलना) है। अनुवाद का मूल अर्थ सार्थक आवृत्ति, पुन: कथन या बाद में कहना है। वैदिककाल में गुरू जो मौखिक रूप से जो कहते थे, शिष्य उसे दोहराते थे, इस दोहराने को ही अनुवाद कहा जाता है। दोबारा कहना अनुवाद है।

संस्कृत में अनुवाद का वह अर्थ नहीं है जो आज हम हिंदी में ग्रहण करते हैं। संस्कृत में इस अर्थ का शब्द ही नहीं है। उदाहरण के लिए 'भाषांतर' का अर्थ संस्कृत में दुसरी भाषा में होता है। नाटकों के लिखित पाठों का संस्कृत में जो अनुवाद दिया जाता है उसे 'छाया' अनुवाद कहा जाता था।

संस्कृत से अन्य भाषाओं में किए जानेवाले भाष्यों को 'भाषाटीका' कहा जाने लगा। पुरानी हिंदी में संस्कृत रचनाओं के हिंदी अनुवादों को 'उलथा' कहा जाता था। 'तरजुमा' अरबी भाषा का शब्द हिंदी में उर्दू के रास्ते आया जो आज अनुवाद के रूप में प्रचलित है। हिंदी में 'अनुवाद' शब्द बंगाली भाषा से आया है। अनुवाद के समानार्थी शब्द है छाया, टीका, भाषा टीका, उलथा, तरजुमा, भाषानुवाद आदि मराठी में भाषातंर शब्द का प्रयोग किया जाता है। अंग्रेजी में इसे 'ट्रांसलेशन' कहते है जो मूलत: लॅटिन शब्द है। 'ट्रान्स' का अर्थ है 'उसपार' और लेशन का अर्थ है 'ले जाना'। अनुवाद शब्द का अर्थ ''पहले किसी भाषा में लिखी गई या कही गई बात को किसी अन्य भाषा में लिखना या कहना" होता है।

#### अनुवाद की उपयोगिता

अनुवादकों के अथक परिश्रम और दूर दृष्टि का ही परिणाम है कि अन्य भाषाओं में रचित ज्ञान-विज्ञान तथा चिंतन मनन को जानने-समझने में आसानी हुई है। यदि मानवीय मनीषा के अनुवादों का यह सिलसिला शुरू न किया होता तो आज संस्कृत, हिंदी तथा भारत के अन्य भाषाओं के महान सहित्यकारों की उत्कृष्ट कृतियां और विश्व की अन्य भाषाओं में प्रकाशित महान रचनाएँ अपनी-अपनी भाषाओं के पाठकों तक संकुचित होकर रह जाती।

वैश्विकरण के संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि ''अनुवाद आधुनिकीकरण, पश्चिमिकरण, औद्योगीकरण, जातीय विविधता एवं बहु सांस्कृतिकता के पाठ का निर्माण करने वाला मुख्य घटक बन गया है क्योंकि अंतर्राष्ट्रीय संचार में उसकी महत्वपूर्ण भूमिका है।''

बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अपना कामकाज भले ही अपनी भाषाओं या अंग्रेजी भाषा में काम करते हैं लेकिन अपने ग्राहकों के साथ संप्रेषण के लिए ग्राहकों की भाषा का उपयोग करते है। भाषाविद् अनुवाद को भिन्न भाषाओं के बीच का 'सेतु' मानते है।

अनुवाद पत्रकारिता का एक विशिष्ट उपादान है, समाचार एवं सूचनाएँ विभिन्न एजेंसियों से प्राप्त कर अपेक्षित भाषा में उसका अनुवाद कर उसे प्रकाशित एवं प्रसारित किया जाता है। प्रौद्योगिकी के इस युग में संप्रेषण व्यवस्था के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व बढ़ता जा रहा है, इस कारण अनुवाद की उपादेयता बहुमुखी और बहुआयामी बनती जा रही है।

### अनुवाद की संकल्पना

'अनुवाद मूल की रसाभिव्यक्ति, भावाभिव्यक्ति, अर्थाभिव्यक्ति, सौंदर्याभिव्यक्ति, शैली-संप्रेषण संस्कृति प्रतिबिंबन की निकटतम समतुल्य और सहज प्रतीकन की नव सृजनात्मक चैतन्यशील प्रक्रिया है'। अत: अनुवाद मानव-जीवन के हर क्षेत्र में उपयोगी है और बिना अनुवाद के हमारी संप्रेषण-व्यवस्था सुचारू रूप से जारी नहीं रह सकती। यह विश्व को एक परिवार के रूप में जोड़ता है और ज्ञान-विज्ञान के द्वार खोलता है।

'अनुवाद भाषाओं के बीच संप्रेषण की प्रक्रिया है, इसके लिए अलग-अलग भाषाओं में भिन्न-भिन्न शब्द है।अंग्रेजी में अनुवाद के लिए 'ट्रासंलेशन' शब्द का प्रयोग किया जाता है। अंग्रेजी के एन एटिमालॉजिकल डिक्शनरी ऑफ द इंग्लिश लैंग्वेज' नामक कोश में इस शब्द का अर्थ एवं व्युत्पित निम्न प्रकार है:- Translate - to transfer मुव्ह टु अनदर प्लेस।

#### अनुवाद प्रक्रिया के विभिन्न चरण

पाठ-पठन: - यह अनुवाद की प्रक्रिया का पहला चरण है। इससे पाठ में अंतर्निहित विचार की गहराई तक जाने में सहायक होती है।

पाठ विश्लेषण:- यह अनुवाद का दूसरा चरण है। अनुवाद की दृष्टि से मूल पाठ का विश्लेषण किया जाता है।

भाषातंरण :- भाषातंरण अनुवाद का तीसरा और महत्वपूर्ण चरण है । यहीं पर मूल भाषा बदली जाती है ।

समायोजन :- यह अनुवाद प्रक्रिया का चौथा चरण है । इसे पुन:गठन भी कहा जाता है ।

तुलना:- अनुवाद प्रक्रिया का यह अंतिम चरण है। इसे पुन:रीक्षण भी कहा जाता है। ट्रांसलेट-टू ट्रांसफर-टू टेंडर टू अनदर लैंग्वेज अंग्रेजी के दूसरे एक शब्द कोश में अर्थात् 'द ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी ऑफ इंग्लिश एटिमालॉजी कोश' में इस शब्द का अर्थ एवं व्युत्पित इस प्रकार की गई है:-

# Remove from one place to another, Turn from one language to another

Translation यह शब्द दो लैटिन शब्द के योग से बना है। ट्रांस का अर्थ - पार लेशन - का अर्थ है ले जाना। इस प्रकार 'पार जाने की क्रिया' भाषा के संदर्भ में एक भाषा का कथन, दुसरी भाषा में ले जाना अर्थात् अनुवाद। जेसी केटफोर्ड: "The Replacement of Textual Material in one language by equivalent Textual Material in another language". अर्थात् – अनुवाद स्रोत भाषा की पाठ्य-सामग्री को लक्ष्य भाषा के समानार्थी पाठ में प्रतिस्थापित करने की प्रक्रिया है।इस प्रकार अनुवाद में, जिस भाषा में अनुदित करने की सामग्री उपलब्ध होती है, उसे स्रोतभाषा कहते है तथा जिस भाषा में अनुवाद करना होता है, उसे लक्ष्य भाषा कहते हैं। लक्ष्य भाषा में स्रोत भाषा की सामग्री का समानार्थी पाठ में रूपांतरण करना, अर्थात् अनुवाद।

#### संप्रेषण क्या है?

संप्रेषण दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच मौखिक, लिखित, सांकेतिक या प्रतिकात्मक माध्यम से विचार एवं सूचनाओं के प्रेषण की प्रक्रिया है। संप्रेषण हेतु संदेश का होना आवश्यक है। संप्रेषण में पहला पक्ष प्रेषक (संदेश भेजने वाला) तथा दूसरा पक्ष प्रेषणी (सन्देश प्राप्तकर्ता)

होता है। संप्रेषण उसी समय पूर्ण होता है जब संदेश मिल जाता है और उसकी स्वीकृति और प्रत्युत्तर दिया जाता है।

#### संप्रेषण के प्रकार :- मौखिक संप्रेषण एवं लिखित संप्रेषण

अनुवाद कर्म भाषा का सहायक है। संप्रेषण के महत्वपूर्ण साधन के रूप में भाषा प्रतिष्ठित है परंतु दो भिन्न भाषा-भाषियों के बीच संप्रेषण में जब भाषा ही बाधा बन जाए तब अनुवाद भाषा की समस्या को दूर कर संप्रेषण की नैरंतर्यता को बनाए रखता है।अनुवाद को विभिन्न विद्वानों ने अलग-अलग रूप से परिभाषित किया है जैसे नाइडा व टैबर के लिए यह पुन:सृष्टी, बर्खुदरोव के लिए यह रूपांतरण है, कैटफोर्ड के शब्दों में यह प्रतिस्थापन प्रक्रिया है तथा ए.एच.स्मिथ के शब्दों में 'अनुवाद करना यथासंभव अधिक से अधिक भाव की रक्षा करते हुए उसे दूसरी भाषा में बदल देना है।

#### शाब्दिक अनुवाद के कारण हुई भूलें -

There is a crying need for more funds यहाँ "crying" के लिए यदि अनुवाद और अधिक धन राशि के लिए रोकर जरूरत बताने का भाव ग्रहण करता है जबिक crying का भावार्थ है Great and urgent . इस प्रकार सही अनुवाद होगा,' अधिक धनराशि की तत्काल और अत्यधिक आवश्यकता है।

The Problem of Pollution should be addressed as early as possible. "प्रदूषण की समस्या को संबोधित किया जाना चाहिए ". यह गलत अनुवाद है। यहाँ 'Addressed' शब्द सुलझाने या समस्या का हल या निराकरण करने के अर्थ में प्रयुक्त है, अत: सही अनुवाद होगा -'प्रदूषण की समस्या का यथाशीघ्र निराकरण किया जाना चाहिए।'

The department is not governed by these bye laws. यहाँ governed by का शाब्दिक अर्थ "शासन" समझकर अनुवाद इस प्रकार किया गया – "विभाग उपविधियों द्वारा शासित नहीं है।" जबिक इसी वाक्य का सीधा अर्थ इस प्रकार है – " इस विभाग पर ये उप– विधियाँ लागू नहीं होती।" क्योंकि शासन किसी व्यक्ति या दल का हो सकता है विधियाँ कभी शासन नहीं करती।

#### अनुवाद और भाषा का अंत: संबंध भूमिका

अनुवाद के लिए दो भाषाओं की आवश्यकता होती है जिसे स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा कहा जाता है। यह कार्य दो भिन्न भाषा-भाषियों के बीच विचार विनिमय के लिए एक सेतु या माध्यम के रूप में कार्य करता है।अनुवाद करते समय अनुवादक को भिन्न दो भाषाओं की ध्विन, रूप या पद, वाक्य, प्रयुक्ति तथा अर्थ के संप्रेषण की विधि समझने के पहले, स्रोत भाषा के इन तत्वों को ग्रहण करना होता है।अनुवाद की प्रक्रिया से गुजरते समय अनुवादक को कभी दोनों भाषाओं के समानताओं तो कभी विषमताओं का सामना करना पड़ता है। वस्तुत: अनुवाद एक

जटिलतम कर्म है क्योंकि प्रत्येक भाषा अपनी प्रकृति, परिवेश, संरचना और अर्थ के साथ विकसित होती है। अत: किसी भी भाषा के आशयपरक, अभिव्यक्तिपरक और समाजपरक आयामों को दूसरी भाषा के संगत आयामों में प्रतिस्थापित करना कोई सरल कार्य नहीं है। अनुवाद प्रक्रिया की मूल समस्या दो भिन्न भाषाओं के परस्पर संप्रेषण की होती है। यह परस्पर संप्रेषण दोनों भाषाओं की संरचना के परिपेक्ष्य में ही संभव हो सकता है।

#### अनुवाद प्रक्रिया में भाषा की भूमिका :-

'एक भाषा' (स्रोत भाषा) की किसी भी बात को 'दूसरी भाषा' (लक्ष्य भाषा) में बोधगम्य बनाना अनुवाद कहलाता है। अनुवाद में लक्ष्य भाषा कभी एक से अधिक भी हो सकती है। स्रोत भाषा से ही अनुवाद किया जाए यह आवश्यक नहीं। उदाहरण के लिए- हरिवंशराय बच्चन ने' 'भाषा अपनी भाव पराए' नामक काव्य संग्रह के लिए भिन्न भाषाओं की 25 कविताओं का अनुवाद किया था जब कि वे केवल हिंदी और अंग्रेजी भाषा जानते थे। उन्हे मूल कविता का अंग्रेजी अथवा हिंदी का शब्दानुवाद दिया जाता था जिससे कविता के भाव-विचार समझने में आसानी होती थी।

मुश्कीलों का आना Part of Life है और उनमें से हँसकर बाहर आना Art of Life है



# ज़िंदगी की किताब

श्री जतिन कुमार, आशुलिपिक ग्रेड -।।

ज़रा सुनो तुम्हें कुछ बताना है जितना मैंने समझा है इस जीवन को, तुम्हें भी समझाना है भले ही तुम अपनी ज़िंदगी में बहुत मसरूफ होंगे पर इस जीवन के बारे में कभी सोचते तो जरूर होंगे क्यों? सोचते हो की नहीं। बड़ी साधारण है ये जीवन की कहानी सुनाता हूँ मैं आज अपनी ज़बानी तो ज़रा सुनों तुम्हें कुछ बताना है जितना मैंने समझा है इस जीवन को, तुम्हें भी समझाना है नन्हीं सी जान, जब मै इस दुनिया में आया मेरे नाम से खुल गयी थी दो किताब एक का मैं खुद रखता और दूसरी का ख़ुदा रखता है हिसाब मेरे हाथों में जो किताब थी उसे कुछ यूं सजाता था मैं अपनी खूबियों को बढ़ा चढ़ा कर दिखाता था मैं ओर खामियों को छिपाता था मैं कोई मेरा भला करें, तो अक्सर लिखना भूल जाता था पर मज़ाल कोई कुछ बुरा कर दे तो बड़े अक्षरों मे गुदवाता था मैं जब कभी अपनी किताब को देखता था, खुश हो जाता मैं जो मैंने अपनी छवि बनाई थी उसे देख कर बच्चों की तरह इतराता था मैं और कोई मुझे मेरी ग़लती बताता था , तो चिढ़ जाता मैं फिर अपनी किताब खोलकर उसकी सारी खामियां. गिनाता मैं पर दोस्तों गलत सही, अच्छे बुरे के इस खेल में गुम हो गया था मैं मेरे कर्मों की एक किताब ख़ुदा के पास भी है ये भूल गया था मैं तो ज़रा सुनो तुम्हें कुछ बताना है

जितना मैंने समझा है इस जीवन को, तुम्हें भी समझाना है
पर इस राह पर चलते, मेरा समय बदलने लगा
मेरा किया हुआ हर कम बिगड़ने लगा
जो जाल मैंने लोगों के लिए बुने थे, उनमे मैं खुद ही फ़सने लगा
और फिर दिन रात बस एक ही नारा जपने लगा
"बताओ भगवान अच्छे लोगों के साथ ही बुरा करता है"
अच्छे लोग, अरे हँसने की बात नहीं
"मेरी किताब के हिसाब से तो दुनिया का सबसे अच्छा आदमी था मैं
एक दिन जब मैं खुद ही हार गया
आंखे बंद मैंने की और उस ख़ुदा को याद किया

"ख़ुदा प्रकट हुए और हँसते हुए बोले" बेटा सबसे पहले, अपनी किताब फ़ाड़ दे तू सोचता था, सब चल रहा है तेरी हिसाब से पर दोस्त गाड़ी तेरी तो चलती थी ख़ुदा की किताब से। जितना तू दूसरों का खाता है वो सब कटता है तेरे ही हिसाब से "तू कभी गौर नहीं करता था

गलत काम करता था पर शोर नहीं करता"
पर यहां का हिसाब न चलता है तेरे हिसाब से
तू लाख छिपाले पर कुछ न छिपता है, ख़ुदा की इस किताब से
इसलिए अब एक नई किताब ले
और अपने अच्छे बुरे सभी कर्मों को इसमे छाप ले
ग़लतियां सामने होंगी तो दोबारा कर नहीं पाएगा
दिल जब तेरा दुखेगा न, तो औरों का न दुखा पाएगा

तो ज़रा सुनो तुम्हें कुछ बताना है जितना मैंने समझा है इस जीवन को, तुम्हें भी समझाना है



# विकास के नाम पर प्राकृतिक संतुलन से खेलता मानव

#### सुश्री रूबी वर्मा, वैज्ञानिक सहायक

विकास के आरंभ में जब मानव के पास संसाधनों की प्रचुर मात्रा थी वह एक साधारण तरीके से जीवन निर्वाह करता था। कालांतर में मनुष्य के मस्तिष्क में अपने जीवन जीने के तरीके को सुधारने की नई-नई तरकीबें आने लगी। यहीं से मानव जीवन का विकास आरंभ हुआ जो आरंभ में सुगम था क्योंकि मानव ने प्रकृति के साथ अच्छा तालमेल बिठा रखा था। मानव मस्तिष्क की उर्जा का भंडार अनंत है। समय के साथ नए-नए विचारों का आना स्वाभाविक था। मनुष्य अपने जीवन को अधिक सुगम बनाना चाहता है। यही सुगमता वर्तमान में मनुष्य को विलासिता पूर्ण जीवन की ओर ले जा रही है।

संसाधनों का आवश्यकता से अधिक दोहन करने की वजह से मनुष्य एवं प्रकृति के बीच का संतुलन वर्तमान समय में अत्यंत गंभीर पड़ाव पर पहुंच गया है। मनुष्य अपने पारिस्थितिक तंत्र को छोड़कर अन्य जीव-जंतुओं के प्राकृतिक तंत्र में घुसता जा रहा है। मनुष्य के इस छेड़छाड़ ने अन्य प्राणियों के अस्तित्व पर सवाल खड़ा कर दिया है।

वर्तमान समय में संसार में पाई जाने वाली विभिन्न जीव-जंतुओं की प्रजातियाँ विलुप्त होती जा रही है। प्रशांत महासागर में पाई जाने वाली कोरल रीफ की 1400 प्रजातियों का भविष्य खतरे में है। मनुष्य द्वारा प्रयोग की जाने वाली प्लास्टिक से जल तंत्र की हालत दिन-प्रतिदिन खराब होती जा रही है, यहां तक कि पानी में रहने वाली बहुत सी मछलियों में कैडिमियम एवं लेड धातु के कण पाए गए हैं। इस तरह की मछलियों को खाने से मनुष्य में कैंसर जैसे रोग होने का ख़तरा है।

मनुष्य ने अपने जीवन को और अधिक विलासिता पूर्ण और सुगम बनाने के लिए तीव्र गित से चलने वाली परिवहन तंत्र विकसित किये है जो कि जीवाश्म के दोहन पर आधारित है। इसके पूर्व काल में लोग परिवहन के लिए पशुओं का उपयोग करते थे। वर्तमान समय में गाड़ियों से निकलने वाला धुआँ प्रकृति को अति असंतुलित बनाने के लिए पर्याप्त है। गाड़ियों से निकलने वाली विषैली कार्बन-डाइऑक्साइड गैस से वायुमंडल का तापमान लगातार बढ़ता जा रहा है, जिसे हम ग्लोबल वार्मिंग के नाम से जानते हैं। ग्लोबल वार्मिंग के परिणामों को जानने के लिए शोधकर्ताओं ने एक क्लाइमेट चेंज मॉडल भी बनाया है जिसके आंकड़े अत्यंत चिंतनीय है।

इस मॉडल के अनुसार यदि हम वर्तमान समय की तरह कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन करते रहे तो धरती का तापमान 2100 तक 4.1 डिग्री सेल्सियस बढ़ जाएगा। जिसके फलस्वरूप ग्लेशियर 33 % भाग पानी महासागरों में जमा हो जायेगा। इसके फलस्वरूप सागरों का जलस्तर 83 एमएम बढ़ जाएगा। संसार के बहुत से तटीय देश जलमग्न हो जाएंगे और हमारी बहुत सारी प्राकृतिक धरोहरों का सर्वनाश भी हो सकता है। अगर हम अपने कार्बन उत्सर्जन पर तत्काल काबू

करें तो भी धरती का तापमान 1.3 डिग्री सेल्सियस बढ़ सकता है साथ ही महासागर का स्तर 17 एमएम जोकि विचारणीय है।

हम पेड़ों को काटकर अपने लिए विकास के नए मॉडल प्रतिदिन बनाते जा रहे हैं। यहां तक कि नदियों के किनारे भी बस्तियां बनती जा रही है। विकास का यह दृश्य शायद युवा पीढ़ी को मंत्रमुग्ध भी कर रहा है परंतु इसके परिणामों से अनिभज्ञ मानव होने वाले नुकसान का आकलन भी नहीं कर रहा है। हमारे प्राकृतिक संसाधनों को पुनः नहीं प्राप्त कर सकते उनके भंडार सीमित है और असीमित तरह से बढ़ती हुई देश की जनसंख्या इनका उपयोग मन-माने ढंग से कर रही है। वह दिन दूर नहीं जब यह संसाधन एक इतिहास बन कर रह जाएंगे।

नई-नई इमारतों के बन जाने से जल चक्र भी प्रभावित हुआ है। आज अतिवृष्टि, अल्पवृष्टि एवं चक्रवात आम बात है। जानने योग्य बात यह है कि स्थानीय जलवायु में तेजी से परिवर्तन हो रहा है जिनको मनुष्य एवं पशु-पक्षी सब परेशान हो रहे हैं। पशु-पिक्षयों की संख्या में तेजी से गिरावट आ रही है। गिद्ध, गौरेया, बंगाल का शेर, कट फोड़वा,आदि विभिन्न पशु-पिक्षयों की प्रजातियाँ विलुप्त होने की कगार पर है। यहां पर भी मनुष्य ने विकास के नाम पर एयरकंडीशनर लगा रखी है जो कि क्लोरो-फ्लोरो-कार्बन नामक गैस को उत्सर्जित करती है जो कि हमारे वायुमंडल में उपस्थित ओझोन की परत का क्षरण करती है।

सूर्य से आने वाली हानिकारक किरणें अब मनुष्य एवं अन्य पशु पक्षियों को प्रभावित कर रही है। आज त्वचा में कैंसर होना एक आम बात है जो कि वायु प्रदूषण का एक परिणाम है। दूषित जल, दूषित वायु, दूषित मृदा ये सभी असंतुलित विकास के परिणाम है। परन्तु अब मानव विकास का आदि हो गया है। वह जानबूझ कर वही जीवन जी रहा है जो उसके एवं आने वाले पीढ़ी के लिए अभिशाप है। संचार क्रांति के चलते संक्रमण बढ़ गया है आज।

मधुमिक्खियां एवं बहुत से पक्षी मर रहे हैं। शोधकर्ताओं के अनुसार ग्लोबल वार्मिंग के परिणामस्वरूप वह देश जो कृषि प्रधान है उनकी अर्थव्यवस्था भविष्य में और घटेगी एवं वो देश जो सेवा के क्षेत्र में विकसित है उनकी 10% विकास दर होगी।

अगर इस बात को सही मानें तो भारत की कृषि व्यवस्था भी भविष्य में खतरे में है और 30 करोड़ भारतीयों को खाने के लिए अन्न की समस्या भी आ सकती है। पीने का पानी भी दूषित होता जा रहा है परिणामस्वरूप अन्न एवं जल आपूर्ति की गंभीर समस्या आती जा रही है।

ऐसा नहीं है कि विकास की परिधारणा गलत है पर उसका संतुलन भी आवश्यक है। आज विश्व को एक साथ सोचने की जरूरत है कि इन गंभीर परिणामों से कैसे निपटा जाए? विकसित एवं विकासशील सभी देशों को मिलकर विकास के नए तरीकों को ढूँढना है जहाँ हमारा प्रकृति का संतुलन भी न बिगड़े और एक सुंदर एवं स्वस्थ जीवन हम आने वाली पीढ़ी को दे सके।

# हिंदी भाषा का सामाजिक एवं वैज्ञानिक पहलू

श्रीमती दीपिका कटारा, वैज्ञानिक सहायक

प्रस्तावना:

"गूँज उठे भारत की धरती हिंदी के जय गानों से पुंजित पोषित परिवर्द्धित हो बालक वृद्ध जवानों से

हिंदी भाषा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि: पुरातन समय से ही हिंदी भाषा का विकास प्रारंभ हो चुका था। भारत में संस्कृत को सभी भाषाओं की जन्मी कहा जाता है। प्राचीन ग्रंथों में भी कई साहित्यिक रचनाओं को पढ़ा जा सकता है जैसे कालिदास की 'मालविकार्जुन','माणिनी की 'अष्टाध्याय' इत्यादि, जो छठी शताब्दी ईस्वी पूर्व लिखी गई थी।

वर्णन: हिंदी भाषा को आज विश्व में चौथे स्थान पर बोला जाता है। भारत में हिंदी भाषा 11 राज्यों में बोली जाती है। हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्जा 26 जनवरी 1950 को गणतंत्र दिवस के साथ ही दिया गया तथा 14 सितंबर 1949 हिंदी को राजभाषा दिवस मनाने के रूप में चुना गया। वैसे तो हिंदी भाषा के कई पहलू है जैसे, आर्थिक, सामाजिक, वैज्ञानिक, सांस्कृतिक आदि। स्वतंत्रता संग्राम के समय से ही गाँधीजी ने हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने पर ज़ोर दिया था व इसकी महत्ता को समझाते हुए गांधी जी ने कहा था, "राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है"- महात्मा गांधी

हिंदी भाषा का सामाजिक पहलू : सामाजिक पहलू में कई तरह से हिंदी भाषा में अपना योगदान दिया है। प्राचीन काल से ही हिंदी ने अपनी जड़ें जमाना शुरू कर दिया था। प्रारंभ के वैदिक काल में पाली, प्राकृत, संस्कृत भाषाएँ हिंदी भाषा की जननी रही। मुगल काल में पर्शियन, ईरानी व उर्दू भाषाओं का प्रभुत्व रहा परंतु मुगल काल के अंत होते ही ब्रिटिश हुकूमत के दौरान अंग्रेजी भाषा अपनी जड़ें जमा चुकी थी।

- 1.1) 1857 की क्रांति से पहले हिंदी भाषा: मुगल काल के अंत होते ही मराठाओं का डंका उत्तर भारत में बज रहा था। उस समय हिंदी का अपना विकास व प्रयोग शुरू हो गया।
- 1.2) 1857 की क्रांति में हिंदी भाषा: सन 1857 की क्रांति में कई विद्रोहियों ने हिंदी भाषा का प्रयोग क्रांति को बढ़ाने में किया व कई गुप्त संदेश भी हिंदी भाषा में लिए गए। समाचार पत्रों का उदय भी लगभग इस समयकाल से हुआ। क्रांति के दौरान सैनिकों ने कई नारे दिए जिसमें 'दिल्ली चलो नारा' अत्यधिक प्रख्यात हुआ।
- 1.3) स्वतंत्रता आंदोलन का चरण इस चरण में कई बड़े नेता भारतवर्ष में मौजूद थे उन्होंने सभी तरीके से हिंदी का प्रयोग करते हुए स्वतंत्रता के पथ पर बढ़ते रहे। जैसे 1) कविताओं का प्रयोग-भगत सिंह की कविताएं, महादेवी वर्मा, मैथिली शरण गुप्त, इत्यादि 2) समाचार पत्रों का प्रयोग जिसके द्वारा हिंदी को एक स्थान मिला, जिसे गांधी जी द्वारा 'हरिजन पत्रिका' जिसने सामाजिक सुधार के जातिवाद से लड़ने में मदद की।
- 2) हिंदी भाषा का साहित्य उद्भव : कई साहित्य, कविताएं, धार्मिक ग्रंथ हिंदी भाषा में लिखे गए जैसे, रामायण, महाभारत, हरिवंश राय बच्चन की कविताएं, इत्यादि।
  - 3) राज्य पुनर्गठन में भाषा का महत्व: स्वतंत्रता के पश्चात भारत वर्ष को समय-समय पर

पुनर्गिठत किया गया जिसमें कई समितियां बनाई गई। जैसे 'घर समिति', 'जे वी पी आयोग', जिसने भाषाई आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की मांग को ठुकरा दिया था परंतु बाद में राज्यों को भाषाई आधार पर गठित किया गया।

- 4) सामाजिक एकता व समरसता में हिंदी: भारत ने कई आक्रमण झेले है परन्तु यहां पर बसने वाले लोगों में हमेशा समरसता व बंधुत्व का भाव रहा है। कई अनेकताओं में भी भारत में लोग शांतिप्रिय भाव से रह रहे हैं इसका एक कारण है, भाषा के आधार पर समानता।
- 5) विश्व में हिंदी: विश्व में 23 % लोग हिंदी भाषा का प्रयोग करते हैं। भारत की अपनी भौगोलिक स्थिति काफी महत्वपूर्ण है इस वजह से भारत को विश्व में एशिया उपमहाद्वीप भी कहा जाता है। इसी वजह से भारत की पहचान विश्व में कायम हुई है और हिंदी भाषा की वजह से ही भारत को हिंदुस्तान का दर्जा प्राप्त है।

हिंदी भाषा का वैज्ञानिक पहलू: 1) देवनागरी लिपि: हिंदी भाषा जिसमे देवनागरी लिपि का प्रयोग हुआ है, जिसमें कई भाषाएं मिलती-जुलती है जैसे मराठी, गुजराती, राजस्थानी, संथाली, पहाड़ी, बोडो इत्यादि। हिंदी भाषा में कई विश्लेषणात्मक पक्ष जो एक भाषाई तौर पर समझने, पढ़ने में वैज्ञानिक तौर तरीके का प्रयोग होता है। जैसे संधि, ध्विन विज्ञान, शब्द विश्लेषण, वाक्य विश्लेषण, व्याकरण, साहित्य, इत्यादि। हिंदी भाषा के वर्णों को दो भागों में बाँटा गया है। 13 स्वर, 34 व्यंजन और व्यंजन वाले भाग को भी ध्विन उच्चारण स्रोत के आधार पर चार भागों में बाँटा गया है, मुर्धन्य, तालव्य, दन्तोष्ठ और ओष्ठ। भाषा का अध्ययन एक वैज्ञानिक तरीका होता है अतः हिंदी भाषा एक वैज्ञानिक भाषा है।

कस्तूरीरंगन समिति- तीन भाषाई सूत्र- वर्ष 1960 के दशक में प्रशासनिक सहूलियत के लिए भाषाओं को तीन सूत्र में बाँटा गया था, जिसमें बालक की संज्ञानात्मक विकास को ध्यान में रखते हुए यह सूत्र दिया गया।

प्राचीन ग्रंथ - इनके अध्ययन से पता होता है कि हिंदी भाषा में ध्विन का अत्यधिक महत्व है। संविधान के अनुच्छेद 343 में हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है।

निष्कर्ष:

हिंदी भाषा राष्ट्र की भाषा।
प्रजातंत्र के शास्त्र की भाषा।
देवनागरी लिपि में भाषा।
जन-जन के मन की अभिलाषा।

वर्तमान समय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2019 में तिमलनाडु द्वारा उक्त नीति का विरोध किया गया था क्योंकि इसमें तीन भाषाई सूत्र का प्रयोग किया गया था। हमें आज यह समझना होगा कि हिंदी हमारी राजभाषा है और हमें यह अलग पहचान पूरे विश्व में दिलाती है।

# विकास के नाम प्राकृतिक संतुलन से खेलता मानव।

सोनिका, वैज्ञानिक सहायक

# अगर करोगे प्रकृति का हरण नहीं हो पाएगा खुशहाल जीवन यापन

पौराणिक काल से ही मानव अपने जीवन के हर कार्य पर प्रकृति पर निर्भर रहा है। प्रकृति को स्त्रोत मानकर कई पौराणिक गाथाएं, किवताएं एवं लेख बनाए गए हैं। अतः इस प्रकार मानव प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर खुशहाल जीवन यापन कर रहा था। परंतु आधुनिक काल में यह संतुलन बरकरार नहीं रह पाया। जैसे-जैसे मानव विकास की ओर प्रगतिशील रहा साथ-साथ वह प्रकृति के साथ भी खिलवाड़ करता गया। विकसित होने के लिए मानव जाति ने कई अविष्कार किए जिनसे मानव जाति के जीवन यापन में कई सुधार आए एवं जीवन सरल भी हो गया। उदाहरण के लिए मानव ने यातायात के लिए गाड़ियाँ बनाई जिससे कई दिनों की यात्रा घंटों में परिवर्तित हो गई, टेलीविजन के माध्यम से दूरस्थ क्षेत्रों की घटनाएँ भी ज्ञात होने लगी परंतु विकासशील एवं नए आविष्कार के साथ-साथ मानव ने प्राकृतिक संतुलन को नज़र अंदाज कर लिया।

मानव द्वारा उत्पन्न समस्याएं विकास के नाम पर गाडियाँ, फ़ैक्टरियां, नाभिकीय ईंधन, प्राकृतिक ईंधन आदि का इस्तेमाल किया जिनसे प्रकृति में कई तरह के प्रदूषित पदार्थ सृजित हो गए। निरंतर उपयोग होने वाली गाडियों एवं फ़ैक्टरियों से निकलने वाले धुएँ में कई प्रकार की दूषित गैसें, उदाहरण के लिए कार्बन-डाइऑक्साइड, सल्फर-डाइऑक्साइड, नाइट्रोजन-ऑक्साइड, मीथेन, पर-फ्लोरोकार्बन क्लोरोफ्लोरोकार्बन, इत्यादि हमारे पर्यावरण में आ चुके हैं। इन सभी ज़हरीली गैसों से ग्रीन हाउस इफेक्ट की समस्या बढ़ती जा रही है। साथ ही ओज़ोन परत में भी छिद्र उत्पन्न हो रहा है। निरंतर बढ़ती गाड़ियाँ अनेक प्रकार की समस्याएं उत्पन्न कर रही है। 1988 में पहली बार अंटार्कटिका में ओज़ोन परत में छिद्र देखा गया जो कि दक्षिणी ध्रुव में है, उस समय विकसित देशों में इसके लिए विकासशील देशों को जिम्मेदार ठहराया क्योंकि विकासशील देश सबसे ज्यादा प्रदूषण फैलाने वाले ईंधनों का उपयोग करते हैं। परन्तु जब 1987 में ओज़ोन परत में छिद्र पाया गया तब कहीं जाकर विकसित देशों में परिवार पर्यावरण की समस्या के बारे में सही तरीकों से सोचना शुरू किया।

# 'विकास है खुशहाली की चाबी पर करो ना यू प्रकृति की बेहाली।'

यद्यपि यह सत्य है कि हमें पृथ्वी में जीवन जीने के लिए विकसित होना अनिवार्य है, परंतु विकसित होने के लिए प्रकृति का विनाश करना कदाचित उचित नहीं। केवल मानव ही एक ऐसा प्राणी है जो पेड़ो को काटकर बनाए गए कागज़ पर ही लिखता है। 'पेड़-पौधे बचाओ', यह कितनी विडंबना की बात है।

यह सत्य है कि आज मानव धीरे-धीरे ही सही प्रकृति की महत्ता एवं महत्वपूर्णता को समझ रहा है। विश्व स्तर पर भी पर्यावरण प्रदूषण एवं प्राकृतिक संतुलन पर संगठन बन रहे हैं। उदाहरण हेतु 1992 में पहला 'एर्थ समिट' किया गया जिसमें विश्व के कई देशों ने भाग लिया। इसके अंतर्गत कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए और इसी के अंतर्गत यू एन एफ सी सी सी कॉन्फ्रेंस ऑफ पार्टी, इत्यादि का गठन किया गया। इस समिति के द्वारा पहली बार पर्यावरण संरक्षण हेतु कानून बनाने की कोशिश की गई। क्योटो प्रोटोकॉल में विभिन्न ग्रीन हाउस गैसों को नामांकन कर विकसित देशों की ग्रीन हाउस गैसों की कटौती करने के लिए कानून बनाया गया। इसके साथ ही 'कार्बन ट्रैपिंग', जैसे उदाहरण भी सामने आए। मोंट्रियल प्रोटोकॉल में भी ओज़ोन की घटती परत को रोकने हेतु कानून बनाए गए। इस प्रकार 2015 में पेरिस में समिट हुआ जिसमें लगभग 191 देशों ने भाग लिया एवं पेरिस एग्रीमेंट में हामी भरी जिसमें यह कहा गया कि ग्लोबल तापमान को 1.5 डिग्री सेल्सियस से ज्यादा नहीं बढ़ने दिया जाएगा क्योंकि अगर यह तापमान 2 डिग्री सेल्सियस तक हो गया तो कई समुद्र तल एवं ग्लेशियर पिघल जाएंगे और मीन सी लेवल काफी बढ़ जाएगा जिसके परिणामस्वरूप प्राकृतिक संतुलन में बहुत बड़ा फ़ेरबदल हो जाएगा एवं बाढ़, भू-स्खलन, भूकंप, इत्यादि त्रासदियां बहुत बढ़ जाएगी। अतः प्राकृतिक संतुलन बनाये रखना मानव का कर्तव्य है।

उपसंहार:

प्रकृति है हमारी शान प्रकृति है हमारी जान करो इसे सुरक्षित

#### तभी बढ़ेगी मानव की शान

अथर्ववेद में मानव द्वारा एक प्रण लिया गया है कि "हे प्रकृति मैं तुमसे केवल उतना ही लूँगा जितना तुम दोबारा सृजन कर सकोगे और मैं तुम्हारी सदैव रक्षा करुंगा।" परंतु आज का मानव यह सब भूल चुका है उसे बस अपनी ज़रूरतें पूरी करनी है, भले ही इसके लिए उसे प्रकृति का हरण हीं क्यों ना करना पड़े। हजारों पेड़ काटे जा रहे हैं एवं जीव जंतु भी विलुप्त होते जा रहे हैं। अगर ऐसा ही चलता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब यह पृथ्वी जीने योग्य नहीं रहेगी।

यद्यपि हमारे भारत में भी कई कानूनी नियम लाए जा रहे हैं, उदाहरण के लिए 'स्वच्छ भारत अभियान', 'नमामि गंगे, 'सम-विषम फार्मूला' इत्यादि, पर केवल क़ानूनों एवं अभियानों से कुछ नहीं होगा। प्रत्येक व्यक्ति को पर्यावरण सुरक्षा की भावना स्वयं अपने अंदर लानी होगी। विश्व स्तर पर तो काम होगा ही पर देशीय स्तर पर भी पर्यावरण के कानून सख़्ती से चलाए जाने चाहिए। 'ग्रीन गैस टैक्स', 'गो-ग्रीन' जैसे अभियानों को सफलता पूर्ण चलाना चाहिए। लंदन में थेम्स नदी को जैसे नवजीवन दिया गया उसी प्रकार सभी प्रदूषित नदियों को नवजीवन देने का कार्य करना चाहिए। अंत में यही कहूंगी कि यदि "करोगे प्रकृति का सम्मान बढ़ेगा, तभी बढ़ेगा मानव का ज्ञान, जीवन खुशहाल रहेगी और आने वाली पीढ़ी भी करेगी हमारा सम्मान।"



# मौसम, जलवायु और सौर ऊर्जा

श्री ए.वी.गोडे,मौ.वि.बी

आज समुचा विश्व जलवायु और परिवर्तनशील मौसम के कारण चिंतित है. कहीं सूखा तो कहीं बाढ़ या तूफान, जिन की कोई निरंतरता नहीं दिखाई दे रही है। जनसंख्या विस्फोट के कारण प्राकृतिक संसाधनों का अनाप-शनाप दुरुपयोग होने से विपुल मात्रा में कार्बन मोनो ऑक्साईड, नाइट्रोजन ऑक्साईड, सल्फर-डाइ-ऑक्साइड और अन्य वायुओं का वातावरण में उत्सर्जन बढ़ गया है। यही वह वजह है कि पृथ्वी के औसतम तापमान में 0.5 से 1.0 अंश सेल्सिअस तक कि बढ़ोत्तरी हो चुिक है। पृथ्वी पर मानव, प्राणी, अन्य जीव-जंतु तथा प्राकृतिक वन संपादाओं का खतरा उत्पन्न हो रहा है।

अगर इस संकट से उबरना है तो इंसान को पारंपारिक उर्जा स्त्रोतों जैसे कोयला, प्राकृतिक तेल, लकडी आदि का उपयोग कम से कम मात्रा में करना होगा। इसके लिए पवन ऊर्जा, समुद्र की ज्वारीय ऊर्जा या सौर ऊर्जा ही एकमात्र पर्याय के रुप में उभरते है। यह सब वास्तव में निर्मल, स्वच्छ और प्राकृतिक ऊर्जा स्रोत है! इनमें से किसी एक को चुनना हो तो "सौर उर्जा" सब से सटीक पर्याय हो सकती है।

पृथ्वी के कर्क वृत्त और मकर वृत्त की काल्पनिक रेखाओं के मध्य में जो भूभाग आता है उन प्रदेशों में लगभग पूरे साल अच्छी मात्रा में सूर्य-प्रकाश दिन भर के लंबे अवधि के लिए उपलब्ध होता है। प्राकृतिक स्त्रोत अर्थात सूर्य के उर्जा का उपयोग कर सौर-बिजली का उत्पादन प्रचूर मात्रा में किया जा सकता है। इस सौर बिजली का उत्पादन और आपूर्ति कर पृथ्वी के सीमित संसाधनों का भार काफी मात्रा में कम किया जा सकता है।



इस का फायदा यह है कि वातावरण में उपर वर्णित वातावरण को नुकसान पहुँचाने वाली विषैली गैसों के उत्सर्जन की मात्रा को सीमित किया जा सकता है। सब से महत्वपूर्ण यह है कि इस से पृथ्वी के वातावरण में पनप रहे असंतुलन को काफी हद तक रोकने में यह कारगर साबित हो सकता है। साथ ही सौर उर्जा का विश्व-व्यापी प्रचलन बढ़ाने से ओजोन होल के समस्या से निजात पाना भी संभव हो जाएगा। ओजोन होल की समस्या से मानव और प्राणियों में बढ़ते कैंसर, चर्म रोग और अन्य जानलेवा बीमारियों के प्रकोप को भी कुछ हद तक कम किया जा सकता है।

दिन ब दिन बढ़ती आबादी और उसकी आवश्यकताओं के पूर्ति के लिए बढ़ता औद्योगिकरण और उस के ऐवज में हो रहे वायु, जल, ध्विन प्रदूषण की समस्या से निजात पाने के लिए सौर-बिजली एक अच्छा इलाज है। यदि वक्त रहते इस सब से मानव अवगत ना हो पाए तो उस के लिए इसका दूसरा विश्वव्यापी खतरा, हिमानी जलाशयों (ग्लेशियरों) के बर्फ के पिघलने का होगा। इससे यकायक बहने वाले पानी से पृथ्वी पर विद्यमान सागरों के जलस्तर में जो लक्षणीय बाढ़ आएगी, समुची धरती को वह जलमग्न कर देगी।

उपर्युक्त समस्याओं का हल यथाशीघ्र ढूँढना आज की जरुरत है और जो बहुत ही जरूरी भी है। वर्तमान समय में इंसान विज्ञान और तकिनकी में उन्न्त हो चुका है। निश्चित ही इंसान सूर्य से मिलनेवाले अपार उर्जा स्त्रोत का उपयोग कर, दुनिया के आधे से ज्यादा उर्जा की आवश्यकताओं को पूरी कर सकता है। बस इसके लिए इच्छाशक्ति होना चाहिए और सभी राष्ट्रों के सहयोगी बनने की आवश्यकता है। इस दिशा में भारत सरकार प्रयत्नरत है।

जागतिक संगठन के प्रयासों से लगभग 121 राष्ट्र, अंतरर्राष्ट्रीय सौर उर्जा गठबंधन में शामिल हो चुके है। भारत के अलावा फ्रांस, अमेरिका जैसे प्रगत और अन्य प्रगतिशील राष्ट्र मिलकर इस हेतु एक कोष में योगदान देनेवाले है। इसके लिए सचिवालय भारत में स्थापित किया गया है। 11 मार्च, 2018 नई दिल्ली में संपन्न हुए अंतरर्राष्ट्रीय सौर उर्जा गठ्बंधन में लगभग चालिस देश शामिल हुए थे। अगर सभी राष्ट्र आर्थिक, तकनिकी और अनुसंधान में सिक्रय योगदान करते है तो विश्व के लिए गंभीरतम जलवायु परिर्वतन की ज्वलंत समस्या का निवारण होने में ज्यादा समय नहीं लगेगा। बस कदम योग्य दिशा में बढ़ाने होगे।

निश्चित ही इसका श्रेय सौर उर्जा क्रांति को ही जाएगा! सौर उर्जा वास्तव में जीवन के लिए बुनियादी जरुरत है। भारत ने सूर्य को जीवन के लिए पोषक माना है। जिसके प्राचीनतम ग्रंथों ने उसे दुनिया की आत्मा करार दिया है। हवा की तरह हर जगह फैली सौर उर्जा का मानव जाती के कल्याण के लिए इस्तेमाल होना ही चाहिए। सौर उर्जा क्रांति को विश्व उर्जा क्रांति में तबदिल करने का भरसक प्रयास होना चाहिए।

भारत मौसम विज्ञान विभाग के पास सभी मौसमी प्राचलों जैसे तापमान, वर्षा के आंकडे, वातावरणीय दाब के आंकडे आदि का पूरे अविध के लिए भंडारण समूचे भारत वर्ष के लिए उपलब्ध है और साथ में तापमान की दैनिक, मासिक, वार्षिक चढ़-उतार और भिन्नता के आंकडों कि जानकारी भी सुलभता से उपलब्ध है। सूर्य से प्राप्त होने वाली उर्जा की मात्रा और तीव्रता मौसमी प्राचलों पर निर्भर करती है जैसे बादलों के वातावरण में अस्तित्व की साल भर

की मात्रा और उस की अवधि, आर्द्रता, हवा की दिशा और गित, जिस का पूरा इस्तेमाल करके सौर उर्जा क्रांति के लिए नई-नई परियोजनाओं का जाल देश के अलग-अलग भू-भाग में आवश्यकता के अनुरुप किया जा सकता है। उपकरणों की बनावट, क्षमता आदि का निर्धारण भी सरलता के साथ किया जा सकता है।

देश तथा विदेश में हो रहे अनुसंधानों का उपयोग कर सौर उर्जा के लिए कम से कम लागत के उपकरणों का इस्तेमाल कर बिजली उत्पादन किया जा सकता है और पारंपारिक स्त्रोतों से निर्मित की जाने वाली बिजली पर इंसान की निर्भरता को कम किया जा सकता है। स्किल, डिजीटल, कौशल तथा मेक इन इंडियां के अंतर्गत सौर उर्जा से चलनेवाले उपकरण, मशीनें, यंत्र का निर्माण किया जाना संभव हो सकता है। सौर उर्जा के उत्पादन से अधिक उस के भंडारण की समूचित व्यवस्था और वैसी तकनिक विकसित करने की आवश्यकता है।

सूर्य प्रकाश की तीव्रता, मात्रा और उपलब्धता नापते हुए, स्थान के अनुसार जो सौर उर्जा प्राप्त होगी जिस से नये- नये रोजगार के स्त्रोत खुलेंगें और आर्थिक प्रगित को नई दिशा और दशा मिलेगी। सौर उर्जा के निर्माण के लिए उचित प्राद्योगी का आविष्कार कर के देहातों और दुर्गम स्थानों की उर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने से युवा वर्ग का शहरों की ओर होने वाले पलायन को भी रोका जा सकता है। प्राकृतिक संसाधनों पर जो ग्रामिण पलायन के कारण दबाव पड़ रहा है वो भी अपनेआप कम हो जाएगा। ग्रामीण युवा वर्ग को स्थानिय रोजगार के स्त्रोत खुलने में इससे मदद होगी। भारतवासियों के अच्छे दिनों का सपना इससे पूरा होगा। आज पूरे विश्व में, और खासकर भारत में बिजली का निर्माण कोयले, तेल, गैस और अन्य प्राकृतिक साधनों के उपयोग से। दिखने में भले ही कम लगे पर इस की लागत पर्यावरण को होने वाली हानियों को देखते हुये, किसी भी प्रकार से किफायती नहीं है। इसलिए जल, बायोमास, वायु और परमाणु संलयन और विखंडन से बिजली पैदा कि जा रही है। लेकिन इन संसाधनों से सीमित बिजली पैदा की जा सकती है।

परमाणु संलयन और खंडन विधि (डिफयुझन) से किफायती बिजली पैदा की जा सकती है। लेकिन इसके लिए परिष्कृत युरेनियम की आवश्यकता होती है जिसकी उपलब्धता की मात्रा भारत में न के बराबर है। साथ ही परमाणु रिऐक्टर भी इतने भरोसेमंद नहीं बनाए गए है कि जिससे हादसों को टाला जा सके। यह बहुत ही महत्वपूर्ण पहलू इसलिए है कि इससे होने वाले किसी भी हादसे में जिससे की रेडियोधर्मि विकिरणों का उत्सर्जन होता है, मानव जीवन और प्रकृति पर दीर्घावलंबी दुष्परिणाम होते है। ऐसे हादसों में रिशया का चेरनोबिल, जापान की फुकुशिमा दाइची या एल मी, नरोरा एट अल पी एस या फिर दूसरे विश्वयुद्ध मे अमेरिका द्वारा इस्तेमाल किए गए अणु बम के वजह से दंशित हिरोशिमा-नागासाकी! इस दंश से आनेवाली कई पीढ़ियां जेनेटीक डिस-आर्डर के कारण प्रभावित होना निश्चित होता है।

यह कार्य प्राकृतिक रुप से हमारे सूर्य में परमाणु (हाइड्रोजन और हेलियम ) के संलयन और विखंडन से लगातार उर्जा तैयार हो रही है, और सिदयों तक होती रहेगी। शायद इस उर्जा को यदि सही तिरके से इंसान बिजली में तबदिल कर सके तो बिजली की आवश्यक्तताओं को पूरी कर सकते है। शायद भविष्य में इंसान को बिजली के अन्य उर्जा स्त्रोतों के बारे में सोचने की

कोई आवश्यकता ही नहीं होगी। जल, वायु परिर्वतन, पर्यावरण असंतुलन और प्राकृतिक असंतुलन जैसे समस्याओं से निजात पाना संभव हो सकेगा। इसके साथ ही यदि इंसान सभी प्रकार के वाहनों को सौर उर्जा से चलाने में सफल हो जाता है तो वायु, ध्विन, जल प्रदूषण से निजात पाना कोई बड़ी बात नहीं है। यातायात साधनों से निकलने वाले दूषित वायु उत्सर्जन से वतावरण का संतुलन कई हद तक बिगड़ रहा है और जलवायु परिर्वतन में इसका बहुत बड़ा योगदान है।

सौर उर्जा क्रांति का अगर सफल आयोजन करना है तो निम्मलिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक है :-

- 1) बेहतर और सस्ता सौर पाइंट सबके लिए सुलभ होना चाहिए ।
- 2) इनोवेशन में इजाफा करना होगा।
- 3) सौर प्रोजेक्ट के लिए धन जुटाना होगा।
- 4) सौर उर्जा की जरुरत को विकास की समग्रता के दृष्टि से देखना होगा।
- 5) सौर उर्जा गठबंधन को मजबूत और गतिशील बनाना होगा।
- 6) सौर टेक्नोलॉजी मिशन को जितना जल्दी हो शुरु करना होगा।
- 7) सौर उर्जा को बढ़ावा देने के लिए उन्नत टेक्नोलॉजी बहुत ही जरुरी है जिसके लिए सौर उर्जा भंडारण तकनिक का विकास करना होगा और सौर उर्जा ग्रिड बनाने होंगें ताकि जिस भू-भाग में सौर उर्जा की किल्ल्त होगी वहां उसे स्थानांतरित किया जा सके।
- 8) निष्क्रिय शीतलन तकनिक (पँसिव कुलिंग तकनिक) का उपयोग, भव्य गैर सरकारी और सरकारी भवनों में अनिवार्य करके सौर उर्जा का उपयोग से प्रदूषण को रोका जा सकता है।
- 9) सभी प्रकार के मौसम पूर्वानुमान का सटीक उपयोग करके ज्यादा से ज्यादा सौर उर्जा प्राप्त कि जा सकती है।

सौर प्लेट कि कल्पना,को साकार करके हम धरा के दुर्गम इलाके जैसे पहाड़, दरिया, आयरलैंड के भागों में तथा गगन चुंभी भवनों के उपयोग करके स्थानिय उर्जा की आवश्यकताओं को पूरा कर सकते है। क्या यह सत्य नहीं है कि कृत्रिम उपग्रह को सौर उर्जा के द्वारा ही निरंतरता से जीवंत रखा जाता है।

सभी समस्याओं पर एक ही है, औषधी रामबाण सिर्फ सौर उर्जा का ही है, एक वरदान। हर कोई है, प्रदूषण के इस विष से आहत जल, वायु, ध्विन क्यों ना हो प्रदूषण से मुक्त क्या यहीं नहीं हर एक इंसान की पहली चाहत जल, वायु, ध्विन प्रदूषण हो रहा है विकराल क्यों ना करें हम जल्द ही सौर उर्जा का सपना साकार।

.....

# दिल्ली की हवा की बदहाली

#### श्री चैन सिंह वर्मा, वैज्ञानिक सहायक

अरे ओ प्यारी दिल्ली क्या हाल हो गया तेरा, हर तरफ है छाया धुंए का ही पहरा | इस जीवनदायी हवा में घुल गया है जहर सारा, अब तो लेना पड़ रहा, मास्क का ही सहारा | हर तरफ लोग खांसते ही दिख रहे, सरकार को भी मास्क बाँटने पड़ रहे, अब तो वो दिन पास आते दिख रहे,

जब पानी की तरह शुद्ध हवा के पैकेट बिक रहे |

हे मतलबी मानव,

तू तो फिर अपना उपचार करवा पायेगा | ये परेशान जानवर किसे अपना दुखड़ा सुनाएगा, ये तो बिना किसी गलती के ही मारा जायेगा | आने वाली पीढ़ी को, क्या तू शुद्ध हवा दे पायेगा ?

> मानवों से ज्यादा वाहनों की संख्या बढ़ रही है, उद्यानों की महक की जगह रसायनों की गंध बढ़ रही है | धडल्ले से फर्जी लाइसेंस बंट रही, और सारा इल्जाम किसान की पराली पर पड रही |

आओ मिलकर कसम ये खाएं, कूड़ा-प्लास्टिक कभी न जलायें, अधिक से अधिक हम पेड़ लगायें, सार्वजनिक वाहनों को ही उपयोग में लायें, इस तरह दिल्ली को धुंए से बचायें | अरे ओ प्यारी दिल्ली क्या हाल हो गया तेरा, हर तरफ है छाया धुंए का ही पहरा





# बचपन की यादें

श्री श्रेष्ठ गौतम, वैज्ञानिक सहायक

ये वही पुरानी राहें है ये दिन भी वही पुराने है वो किस्से मेरे गाँव के जो गाँव बहुत पुराने है

> नदियों में नहाने जाते फिर शाम को लौटकर आते कितना अच्छा मंजर था वो सपनों जितना सुन्दर था वो

इतने अच्छे अनुभव पर भी हमको फटकारा जाता पर वो गाँव मैं कैसे भूलूँ जहाँ बचपन को संवारा जाता

> जिस धूप में खेला करते जिस छाँव में सोया करते वो बात बहुत पुरानी है बस ऐसी मेरी कहानी है

कुछ बचपन को मैंने खोया जब जॉब मैंने पाया राहें इतनी आसान न थी इसकी हमको पहचान न थी

> पर जॉब मिली इतने पर भी कुछ तो सूना लगता है पर गाँव घुमने जाते है जब वो ही अपना लगता है

कितनी अच्छी राहें थी वो कितनी अच्छी यादें थी वो कुछ मीठी थी कुछ कड़वी थी फिर भी कितनी अपनी थी वो

> बचपन की अपनी यादों को कुछ कविता से बयां कर पाए कुछ भूल गये, कुछ याद रहे वो अल्फाज आज लिख पाए ये वही पुरानी राहें है ये दिन भी वही पुराने है



#### एक बादल

#### श्री अमित मेहरा, वैज्ञानिक सहायक

उस बादल का गरजना घमंड नहीं उसका। एक बूंद का खुद से अलग होने का दर्द है। वो दर्द बेजुबान ही सही। लेकिन उस बादल का इस जमीन पर यह एक कर्ज है। क्या यह जमीन उस कर्ज को चुका पाएगी ? वापस उस बूंद को उस बादल को लौटा पाएगी ? एक नई बूंद तो लौट गई है, उस बादल के पास। उसे थी, पुराने चेहरे को वापस देखने की आस। खुद को बना ले एक बादल जैसा, जो ठहरा नहीं कहीं। मंजिल पर नहीं, खुद के हौसले पर था उसका यकीन खुदगर्ज नहीं वो बादल, जिन्दगी भर लुटाता चला गया। अपनी दहाड़ के पीछे, अपना दर्द छु पाता चला गया । आज उस बादल का अंत करीब है। इस जमीन पर कितना ही बड़ा हो उसका एहसान लेकिन यही उसका नसीब है। नसीब को नहीं लकीरों की दरकार । बादलों को लकीरें हुआ नहीं करती । ये जिन्दगी है जनाब, इसे धडकनों की जरूरत है। जिन्दगी लकीरों से चला नहीं करती। आज वो बादल नहीं मौजूद इस आसमान में। लेकिन आज भी उसका एहसास जिंदा है। हर कोई हमेशा इस जमीन पर नहीं। सिर्फ यादों में जिया है। कुछ फासले कदमों से नहीं हौसलों से तय किए जाते है। कुछ सफर अंधेरों में बिना रोशनी के ही तय किए जाते है। एक जमीन ही तो है जिसने हर गिरती चीज को अपनाया है। उस चीज का पता बिना पूछे खुद में उसकी नाकामयाबी को छुपाया है। फिर क्यों निकला है तु आसमान में उड़ने। जमीन से प्यार कर इस पर ही तेरा साया है।

### कचरे का निबटान,खाद का निर्माण

### श्री जी.एम.शहारे, मौ.वि.-बी

घरेलू कचरा एक समस्या और समाधान: आज संपूर्ण देश की मिट्टी, पानी और हवा घरेलू कचरे से प्रदूषित हो रही है। रोज हजारों टन की मात्रा में फेंके जा रहे घरेलू कचरे से होने वाला प्रदूषण इतना बढ़ गया है कि, हमारी लाख कोशिशों के बावजूद भी इससे होने वाली समस्याओं का समाधान नहीं मिल पा रहा है। शहरों में घरेलू कचरा आज एक बड़ी समस्या के रूप में अवतरित हो चुका है। रोजाना घरों, होटलों और अन्य व्यावसायिक स्थानों से लाखों टन कचरा उत्पन्न होता है। जिसमे कागज, गत्ते, कांच, प्लास्टिक, पॉलिथीन के पैकेट, धातुएं, बचा हुआ खाना, जानवरों की हड्डीयां, सड़ी-गली सब्जियां, और अन्य तरह के सामान शामिल होते हैं। नगर निगम, नगर पालिकाओं के द्वारा शहर के विभिन्न स्थानों पर इस कचरे को डस्टबिन रखकर इकट्ठा किया जाता है, और फिर शहर से बाहर एक निश्चित स्थान पर फेंक दिया जाता है जहाँ यह सड़ता रहता है। घरों से रोजाना उपयोग के बाद निकलने वाले इस कचरे के सड़ने पर दुर्गन्ध उत्पन्न होती है, साथ ही भिन्न प्रकार के कीट जैसे मक्खी, मच्छर आदि पनपते हैं। इससे पैदा होने वाले बॅक्टीरिया और वायरस हवा और पानी में घुलकर न केवल महानगरों में बल्कि छोटे-छोटे कस्बों में भी भिन्न-भिन्न तरह के जानलेवा संक्रामक रोगों का कारण बनते हैं।

ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम 2016 के अनुसार 'कोई भी व्यक्ति स्वयं से उत्पन्न कचरे को अपने परिसर के बाहर सड़कों, खुले सार्वजनिक स्थलों पर, नाली या जलीय क्षेत्रों में न तो फेंकेगा और न ही जलाएगा या दफनायेगा' लेकिन शहर में इसकी धि ज्याँ उड़ाते दृश्य नजर आ रहे है। कचरे के प्रबंधन को लेकर भिन्न कार्य शामिल हो सकते हैं जिनमे कचरे से खाली गड्ढों को भरना, कंपोस्टिंग करने जैसे कार्य शामिल हो सकते हैं। साथ ही साथ प्लास्टिक कचरे के प्रबंधन के लिए पुनर्चक्रण की विधियां अपनायी जा सकती है, कुछ विधियों द्वारा राजस्व भी प्राप्त किया जा सकता है, जिनमे खाद बनाकर बेचना, ऊर्जा निर्माण करने जैसे कार्य शामिल हैं।

आज भूमि, पानी,वायु प्रदूषित हो गयी है | कचरा खुली जगह में फेंका जाता हैं, बड़े कारखाने बहुत धुँए का उत्सर्जन करते हैं, धुँए में मौजूद धूल के कणों के कारण हवा प्रदूषित हो जाती हैं, खराब गंध के अलावा रोगाणू भी कचरे को सड़ाकर विभिन्न बीमारियों को जन्म देते हैं | मक्खी, मच्छर तथा चूहों के लिए कचरे का टीला एक उपजाऊ प्रजनन स्थल हैं | कचरा घरों और औद्योगिक अपशिष्ट निदयों में आता है इससे निदयों का पानी प्रदूषित हो जाता है | कूड़े के

जलने से पर्यावरण में फैले सूक्ष्म कण जो जहरिले होते हैं, आकार में इतने छोटे होते है कि वे श्वसन के माध्य्म से हमारे शरीर में प्रवेश कर सकते हैं और फेफडों को नुकसान पहुँचा सकते हैं। भारत और चीन में प्लास्टीक बोतलें तथा इलेक्ट्रानिक सामान सहित सभी प्रकार के कूड़े जलाते हैं। यह वायु प्रदूषित होने का मुख्य कारण हैं। इससे कार्बनडाँयओक्सैड और कार्बन मोनोओक्सैड जैसे जहरिले गैसों का निर्माण होता हैं जो मानव शरीर तथा सभी जीवों के लिए हानिकारक होता हैं। खेतों मे किसानों द्वारा पराली जलाने से दिल्ली तथा आस-पास का परिसर काफ़ी प्रदूषित होने की वर्तमान में काफ़ी चर्चा हो रही हैं।

इस समस्या पर नियंत्रण के लिये भारत सरकार ने क्षेत्र-आधारित विकास और शहरी स्तर के स्मार्ट समाधान के माध्यम से जीवन में सुधार के लिए स्वच्छ भारत अभियान तथा स्मार्ट सिटी मिशन लागू किया हैं। नीति आयोग ने नगरपालिका के ठोस अपिशष्ट प्रबंधन की समस्या से निपटने के लिये व्यापक ढाँचा तैयार किया है। शहरी क्षेत्रों में रहने वाले 377 मिलियन निवासियों के कारण जनगणना 2011) प्रति दिन 170,000 टन ठोस अपिशष्ट पैदा होता है। इस तथ्य को देखते हुए समय सीमा में कार्य पूरा करने के लिए नीति आयोग ने यह एजेंडा सही समय पर विकसित किया है क्योंकि 2030 तक जब शहरों में 590 मिलियन निवासी हो जाने के कारण शहरों की सीमायें समाप्त होने से प्रकृति और शहरी अपिशष्ट का प्रबंधन करना मुश्किल होगा। सामाजिक और आर्थिक वास्तविकताओं के चलते इस समस्या का शीघ्र तकनीकी समाधान आवश्यक है और नीति आयोग का एजेंडा इस समस्या को हल करने का प्रयास है।

इस एजेंडा में सुझाए गए समाधान दो तरह के हैं : बड़ी नगर पालिकाओं के लिए अपिशष्ट पदार्थ से ऊर्जा तैयार करना और छोटे कस्बों तथा अर्ध-शहरी क्षेत्रों के लिए अपिशष्ट का निपटान कर खाद तैयार करने की विधि।

स्थापना के बाद यह प्रस्तावित निगम 2019 तक 100 स्मार्ट शहरों में तेजी से अपिशृष्ट से ऊर्जा तैयार करने के संयंत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। स्वच्छ भारत अभियान पर गठित मुख्यमंत्रियों के उप-समूह ने पहले ही 2015 की अपनी रिपोर्ट में ऐसे संयंत्रों की स्थापना की सिफारिश की है। इस उच्च तकनीक समाधान को व्यापक रूप से समर्थन मिला है, क्योंकि कचरे की मात्रा कम कर 2019 तक 511 मेगावाट बिजली उत्पन्न होगी।

#### ग्रामीण क्षेत्र में कचरा निष्पादन

गाँव में नगरपालिका की सुविधा उपलब्ध नहीं है। अतः कूड़े-कचरे का छोटे स्तर पर निष्पादन के लिए निम्नलिखित तरीके अपनाए जा सकते हैं

1. कम्पोस्टिंग 2. वर्मीकल्चर

(क) कम्पोस्टिंग (खाद बनाना): यह वह प्रक्रिया है जिससे घरेलू कचरा जैसे घास, पत्तियाँ, बचा खाना, गोबर वगैरह का प्रयोग खाद बनाने में किया जाता है।

गोबर और कूड़े-कचरे की खाद तैयार करने के लिए एक गड्ढ़ा खोदें। गड्ढ़े का आकार कूड़े की मात्रा तथा उपलब्ध स्थान के अनुरूप हो। आमतौर पर एक छोटे ग्रामीण परिवार के लिए 1 मीटर लम्बा और 1 मीटर चौड़ा और 0.8 मीटर गहरा गड्ढ़े खोदना चाहिए। गड्ढ़े का ऊपरी हिस्सा जमीन के स्तर से डेढ़ या दो फुट ऊँचा रखें। ऐसा करने से बारिश का पानी अन्दर नहीं जाएगा। गड्ढ़े में घरेलू कृषि, कूड़ा-कचरा एवं गोबर भूमि में गाड़ देना होता है। खाद करीब छह महीने के अन्दर तैयार हो जाती है। गड्ढ़े से खाद निकाल कर ढ़ेर करके मिट्टी से ढ़क देनी चाहिए। इसे खेती के उपयोग में ला सकते हैं।

(ख) वर्मीकल्चरः यह कचरे से खाद बनाने की एक प्रक्रिया है। इसमें केचुओं द्वारा जैविक विघटन कचरा जैसे सब्जी का छिलका, पत्तियाँ, घास, बचा हुआ खाना इत्यादि से खाद तैयार की जाती है।एक लकड़ी के बक्से या मिट्टी के गड्ढ़े में एक परत जैविक विघटन कचरे की परत बिछाई जाती है और उसके ऊपर कुछ केचुएँ छोड़ देते हैं। उसके ऊपर कचरा डाल दिया जाता है और गीलापन बरकरार रखने के लिए पानी का छिड़काव किया जाता है। कुछ समय के उपरान्त यह बहुत ही अच्छी खाद के रूप में परिवर्तित हो जाती है।

ग्रामीण क्षेत्रों में गोबर, घरेलू कचरा तथा कृषि कचरे का पूरा उपयोग नहीं किया जाता है। अतः आवश्यक है कि ग्रामवासियों को कचरे से खाद उत्पन्न करने के बारे में जानकारी दी जाए और गाँव का प्रदूषण रोका जाए। साथ में कचरे का भी सदुपयोग हो जाए। शहरी क्षेत्र में कचरा निपटान

शहरों में कचरा निपटान की उचित व्यवस्था नगरपालिका द्वारा की जाती है। यदि यह कार्य सुचारू रूप से नहीं चल रहा है तो नगरपालिका को सूचित करें और उन पर दबाव डालें कि घोषित स्थल से मोहल्ले का कचरा नगरपालिका एकत्रण केन्द्र स्थानांतरण करें जहाँ से उसका उचित निपटान हो सके। कूड़े-कचरे का सही प्रकार से निष्पादन न होने से पर्यावरण गन्दा होता है। दुर्गन्ध फैलने के अतिरिक्त इसमें कीटाणु भी पनपते हैं जो कि विभिन्न रोगों के कारक होते हैं। ऐसे स्थानों पर मच्छर, मिख्याँ और चूहे भी पनपते हैं। अतः घर में, घर के बाहर या बस्तियों में पड़ा कचरा समुदाय के स्वास्थ्य के लिए भयंकर दुष्परिणाम पैदा कर सकता है।

जो गाँव तथा कस्बे शहरों से नजदीक हैं वे ग्रामपंचायत की सहायता से शहरों से कचरा लाकर बड़ी मात्रा में खाद का निर्माण कर सकते हैं। इससे गाँव के किसानों को बड़ी मात्रा में तथा सस्ते दरों में खाद उपलब्ध होगा। दूसरी ओर शहरों के कचरे का बड़ी मात्रा में निपटान होकर प्रदूषण कम करने में मदद भी होगी।

# हिन्दी भाषा

श्री ए.एम.भट्ट ,मौ.वि.ए

जननी की वो थी पहली वाणी जो बनी आज मेरी मातृभाषा,
मान बहुत सम्मान बहुत, है स्वजनों के अभिमान की भाषा।
कुटिल व्याध के वो निष्ठुर पंजे, भारत माँ के चरणों में शिकंजे,
भाषा बोली में भेद करा कर, लुटती रही हमारी अभिलाषा।
जन जागरण की वो पहली बेला, स्वाधीनता हित रण की बेला।
धर्म जाति और भाषा विपुल, भारत माँ हेतु गए सब भूल।
हर सपूत लहू से खेल गया, निज भुजाओं का फिर वार किया।
नई सुबह फिर आई थी, उषा किरणों में अंगड़ाई थी,
स्वाधीन हुई हमारी आशा, हुई स्वतन्त्र फिर हिंदी भाषा।
अनेकता में एकता की डोरी समान, हिंदी ही थी देश की प्राण।
लोकतंत्र की पोथी में हिंदी न ऊंची मंजिल थी पाई।
भारत माता की बनी जो भाषा, जन जन की होती पूरी आशा।
स्वच्छंद प्रवाहमयी, संस्कृत की बेटी, कभी रही थी देवों की भाषा,
आज अक्षय सौंदर्यमयी अति सरल, हिंदी हमारी है राष्ट्रभाषा।

हिन्दी हमारी राष्ट्रीय भाषा है इसका सम्मान करें

## हिंदी दिवस का महत्व

श्री कार्तिक गोवर्धन वनवे, वै.स.,अकोला

हमारा भारत देश विविधताओं का देश है। देश के हर क्षेत्र में सांस्कृतिक,भौगोलिक, तथा भाषाई विविधता पाई जाती है। भारत देश में लगभग 1600 भाषाएँ बोली जाती है। हर क्षेत्र में अलग-अलग भाषाएँ बोली जाती है। इसी भाषाई विविधता को लेकर कुछ लोग हमें बाँटने का प्रयास करते हैं। इसलिए कुछ समाज सुधारकों ने अंग्रेजों से लड़ने के लिए एकजुट और संगठित होकर हिंदी को अपनाया है। हिन्दी भाषा भारत के हर प्रान्त में बोली जाने वाली भाषा है। इसमें भारत के हर प्रान्त को एक बंधन में बांधने की शक्ति है।

यह ध्यान में रखते हुए हिंदी भाषा को राष्ट्रीय भाषा का दर्जा दिया गया है। हिंदी विश्व में सबसे ज्यादा बोली जानेवाली भाषाओं में से एक है। हिंदी भाषा हमें हमारी संस्कृति से जोड़ने का कार्य करती है।

हिंदी भाषा बोलने और लिखने में काफी सरल और सुलभ भाषा है। 14 सितंबर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को केंद्र सरकार की राजकाज की भाषा अंगीकार करके हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया। हिंदी भाषा को बढ़ावा देने और प्रचार-प्रसार के उद्श्य से हर वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है। फिर भी देखने में आया है कि अंग्रेजी कार्यालय गतिविधियों से पूरी तरह हट नहीं पाया है। इन बातों को ध्यान में रखते हुए हमें हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग के लिए निरंतर प्रयासरत होना चाहिए।

बीते कुछ वर्षों से भारत सरकार राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए सराहनीय कार्य कर रहे हैं। सभी सरकारी कार्यालयों में हिंदी में काम करने के लिए प्रोत्साहन दिया जा रहा है, और हिंदी भाषा में काम भी किया जा रहा है। मगर अब हम सभी नागरिकों की यह सामूहिक जिम्मेदारी है कि हिंदी भाषा का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग कर अपनी भाषाई विरासत को बचाने में अपना योगदान दें। संस्कृत की तरह हिंदी भाषा भी बोलचाल की भाषा से विलुप्त न हो इसके लिए निरंतर प्रयासरत होना चाहिए।



## प्रादेशिक मौसम केन्द्र नागपुर

प्रादेशिक मौसम केन्द्र नागपुर में दिनांक 03.09.19 से 16.09.19 तक पूरे हर्षोल्लास से हिंदी पखवाडा मनाया गया । इस अवसर पर कार्यक्रम का उद्घघाटन श्री एम.एल.साहू, उपमहानिदेशक, प्रा.मौ.के.नागपुर द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया तत्पश्चात् कार्यालय के कार्मिकों द्वारा सरस्वती वंदना प्रस्तुत की गई । श्री एम.एल साहू,उपमहानिदेशक ने अपने उदबोध में सभी को हिन्दी में अधिक से अधिक कार्य केरने का आह्वान किया एवं हिन्दी को अत्यंत सशक्त तथा वैज्ञानिक भाषा बताया।

कार्यालय में वर्ष भर में हुए गतिविधियों की रिपोर्ट श्रीमती शांता उन्नीकृष्णन, वरिष्ठ अनुवादक द्वारा प्रस्तुत की गई । पखवाडे के दौरान कार्यालय में विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जैसे की हिंदी टंकण, हिंदी टिप्पणी एवं पत्राचार, निबंध, हिंदी काव्य - पाठ, वाद –विवाद तथा स्लोगन प्रतियोगिता आदि इस अवसर पर एक दिन के हिंदी कार्यशाला का भी आयोजन किया गया जिसमें श्री एम.एल.साहू, उपमहानिदेशक, महोदय तथा श्रीमती भारती पारवे, प्रशासनिक अधिकारी- ।।। द्वारा व्याख्यान दिया गया। श्री एस. एन.बिद्यांता, मौसम विज्ञानी-ए/ राजभाषा संपर्क अधिकारी द्वारा राजभाषा में अधिक से अधिक कार्य करने के लिए अपील जारी की गई। पखवाडे के अवसर पर पुरस्कृत कविताओं के प्रस्तुतीकरण के साथ छोटी सी सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया। इस वर्ष 2019 में हिंदी में सर्वाधिक कार्य के लिए मौसम कार्यालय, इंदौर को राजभाषा शील्ड प्रदान दिया गया। समापन समारोह के अवसर पर श्री एम.एल.साहू, उपमहानिदेशक महोदय ने समापन समारोह कार्यक्रम की अध्यक्षता की तथा डाक्टर सविता शर्मा, अनुसंधान अधिकारी, (वैज्ञानिक-।।।)मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित थे उन्होंने हिंदी दिवस के अवसर पर सभा को संबोधित किया एवं हिंदी में कार्य करने हेतु मार्गदर्शन किया साथ ही उनके हाथों विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों को प्रस्कार भी दिया गया।

# हिंदी पखवाडे के समापन समारोह पर विजेताओं को मुख्य अतिथि के हाथों पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया जिसका विवरण निम्नानुसार है :

क्र.स. 	प्रतियोगिता	प्रतिभागियों के नाम सर्वश्री 	पुरस्कार	
	हिंदी टंकण			
1.		राहुल सोलकर	प्रथम	
2.		एस.डी.खासारे	व्दितीय	
3.	हिंदी टिप्पण	एस.ए.पवार	तृतीय	
1.	<u> </u>	भारती पारवे	प्रथम	
2.		डी.एस.पाटील	व्दितीय	
3.	हिंदी निबंध	पी.एस.चिंचोले	तृतीय	
1.		रूबी वर्मा	प्रथम	
2.		दीपिका कटारा	व्दितीय	
3.		सोनिका	तृतीय	
	<u>हिंदी वाद-विवाद</u>			
1.		रूबी वर्मा	प्रथम	
2.		दीपिका कटारा	व्दितीय	
3.		सपना मीणा	तृतीय	
	हैंदी स्वरचित काव			
1.		जी.एम.शहारे	प्रथम	
2.		जतिन कुमार	व्दितीय	
3.		आर.डी.मेश्राम	तृतीय	
	<u>हिंदी स्लोगन</u>	00		
1.		दीपिका कटारा	प्रथम	
2.		एफ.डी.झोडापे	व्दितीय	
3.		जी.एम.शहारे	तृतीय	

# हिंदी पखवाड़ा 2019

























# पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिताएँ







# समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह









#### मौसम केंद्र भोपाल

मौ.के.भोपाल में हिन्दी पखवाडा दिनांक 14 से 30 सितम्बर 2019 तक मनाया गया, जिसके अंतर्गत विभिन्न प्रतियोगितायें आयोजित की गयी तथा प्रतियोगियों को पुरस्कार बांटे गये। हिन्दी दिवस का आयोजन दिनांक 14/09/2019 को तथा हिन्दी पखवाडे का समापन दिनांक 30/09/19 को किया गया। इसका संयोजन डॉ. जी.डी.मिश्रा, हिन्दी अधिकारी द्वारा किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथी डॉ. पंकजकुमार, सहायक प्राध्यापक, पृथ्वी एवं पर्यावरण विज्ञान विभाग, भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, भोपाल तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री जे.के.एस. यादव, निदेशक ने की। सर्व प्रथम दीप प्रज्जवलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ तथा सरस्वती वंदना, श्रीमती मेघा वर्मा, कु. मधु विश्वकर्मा एवं कु. शिवांगी शुक्ला के द्वारा की गयी। कार्यक्रम का संचालन श्री वहीद खान ने किया।स्वागत भाषण एवं पूरे पखवाडे की रुपरेखा की परिकल्पना डॉ.जी.डी.िमश्रा, सम्पर्क हिन्दी अधिकारी एवं मौ.वि.अ ने की। अध्यक्षीय उद्घोधन में श्री जे.के.एस.यादव,िनदेशक ने कार्यालय के कार्य तथा अन्य कार्यों में राजभाषा का प्रचार प्रसार तथा उपयोग पर हिन्दी प्रयोग के लिये बल दिया।

मुख्य अतिथि डॉ. पंकजकुमार द्वारा भारत की राजभाषा की उपयोगिता तथा आम बोलचाल की भाषा, कार्यालयीन प्रयोग में अधिकाधिक करने पर बल दिया।मौ.के.भोपाल द्वारा मध्यप्रदेश के आम जनों तक मौसम की सूचना ठीक ढंग से पहुँचाई जा रही है, उसकी भूरी-भूरी प्रशंसा की। मुख्य अतिथि तथा निदेशक द्वारा, प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार बांटे गये।कार्यक्रम के उपरांत धन्यवाद, कु. अपूर्वा सिंहरौल के द्वारा दिया गया।

उक्त सभी प्रतियोगिताओं में सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया जिसके लिए प्रथम,द्वितीय,तृतीय एवं प्रोत्साहन पुरस्कार वितरित किए गए। पखवाडे के समापन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. पंकज कुमार, सहायक प्राध्यापक, पृथ्वी एवं पर्यावरण विज्ञान विभाग, भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, भोपाल से थे।हिन्दी पखवाडा 2019 के दौरान आयोजित की गई प्रतियोगिताओं के संबंध में संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:- परिणाम सूची:-

दिनांक 17.09.19(मंगलवार) को स्वरचित कविता पाठ का आयेजन हुआ जिसमे श्री जे.के.एस यादव, निदेशक के साथ ही 25 अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित रहें एवं उक्त कार्यक्रम का संयोजन डॉ. जी.डी.मिश्रा, मौ.वि.अ ने किया।

कवितापाठ-17.09.19 1) श्रीमती मेघा वर्मा, वै.स. एवं श्री आर.के.अग्रवाल, वै.स. 2) श्री विवेक पाण्डेय, वै.स.

निबंध - 18.09.19 1) श्री विवेक पाण्डेय,वै.स., श्रीमती सुरिभ पुरोहित, उ.श्रे.लि 2)श्रीमती खुशनुमा हुसैन,वै.स.श्रीमती मेघा वर्मा, वै.स.एवं श्री सौरभ शर्मा,वै.स 3) श्रीमती स्वाति दुबे, उ.श्रे.लि एवं श्री अजय यादव वै.स.

तात्कालिक भाषण- 20.09.19 1) श्री वहीद खान, वै.स. 2) कु. अपूर्वा सिंहरौल, वै.स.

3) श्री हरविंद्र सिंह, क.श्रे.लि

शुद्र लेखन- 23.09.19 1) कु. शिवांगी शुक्ला, वै.स.

2) कु. मधु विश्वकर्मा. वै.स., श्री एस.एन.साहू, मौ.वि.अ

3) श्री शशांक शेखर. वै.स श्री मो. रफीक, श्रीमती पी.सी.लडिया,एमटीएस

हिन्दी प्रश्नोत्तरी- 25.09.19 1) श्री पी.के.साहा, मौ.वि.अ एवं अभिजीत चक्रवर्ती, वै.स. 2) श्री आर.के.सिंह, सहायक

हिन्दी अंताक्षरी- 27.09.9 1) श्री योगेश श्रीवास्तव,मौ.वि. ब एवं श्री एन.पी. मेश्राम,मौ.वि.ए

2) श्री एच.एस.पाण्डेय, मौ.वि.अ एवं कु.अपूर्वा सिंहरौल, वै.स.

3) कु.शिवांगी शुक्ला, वै.स. एवं श्री ए.के.उईके, एम.टी.एस

निर्णायक मण्डल एवं प्रतियोगिताओं में भाग लेनेवाले अन्य सदस्यों को सम्मानित किया गया। विषेश पुरस्कार- श्री पी.के.रायकवार, वै.स. श्री विजयकुमार, स./वाला,

श्रीमती आरती, श्रीमती रुपा एवं श्रीमती मीना।















# मौसम केंद्र रायपुर

मौसम केन्द्र, रायपुर में दि.03.09.19 से 17.09.19 तक हिंदी पखवाडा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन श्री एच.ए.के.िसंह, कार्यालय प्रमुख, मौ.के.रायपुर की अध्यक्षता में हुई समापन समारोह के अवसर पर दिनांक 17.09.2019 को डॉ.डी.के.बोदले, प्राध्यापक, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय रायपुर मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित थे। इस अवसर पर विभिन्न प्रकार के प्रतियोगिता जैसे हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता, हिंदी टंकण प्रतियोगिता, स्वरचित हिंदी काव्य पाठ प्रतियोगिता, "स्वच्छ भारत अभियान - एक जन आंदोलन" पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता में अमित कुमार गुप्ता - प्रथम, संजू देवांगन - द्वितीय, नीतेश सोनबेर - तृतीय रहे। हिंदी टंकण प्रतियोगिता में अमित कुमार गुप्ता - प्रथम, अमित अग्रवाल- द्वितीय, नितेश सोनबेर -तृतीय रहे। स्वरचित हिंदी काव्य पाठ प्रतियोगिता में प्रथम - देवती ठाकुर, द्वितीय - एन.के.सिन्हा, तृतीय - संजू देवांगन रहे। इमला प्रतियोगिता में नेहा अग्रवाल - प्रथम, अमित कुमार - द्वितीय, संजू देवांगन - तृतीय रहे। भाषण प्रतियोगिता में पी.के.चंद्राकर - प्रथम, एन. के. सिन्हा - द्वितीय, अमित कुमार गुप्ता - तृतीय रहे।

समापन समारोह में डॉ. डी.के.बोदले ने हिंदी भाषा समाज और संस्कृति को किस तरह जोड़ती है - पर प्रकाश डाला । उन्होंने कहा कि हिंदी ही ऐसी भाषा है जो पूरे देश को एक सूत्र में जोड़ता है इसमें वैज्ञानिकता इतनी अधिक है कि इसे बोलने और समझने में बहुत आसान है । समापन समारोह में श्री एच.ए.के.सिंह, निदेशक मौसम केंद्र रायपुर द्वारा कार्यालय में हिंदी की उपयोगिता पर प्रकाश डाला गया श्री एन.एस.मेहता द्वारा हिंदी में कार्यालयीन कार्य लगभग 95% से अधिक कार्य किया जा रहा है भविष्य में इसे 100% तक के जाने का लक्ष्य है । एच.पी.चंद्रा ने हिंदी के स्वतंत्रता पूर्व हिंदी की दशा और दिशा तथा स्वतंत्रता के पश्चात हिंदी की दिशा का क्रमिक विकास तथा सरकार और विभिन्न लोगों द्वारा दिए गए वक्तव्य तथा योगदान पर प्रकाश डाला गया । हिंदी पखवाड़े में कार्यालय के सभी कर्मचारियों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया गया कार्यक्रम का संचालन श्री एच.पी.चंद्रा ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन श्री एन.एस.मेहता द्वारा दिया गया इस कार्यक्रम में रिटायर्ड हिंदी अधिकारी सहित रिटायर्ड कर्मचारी भी उपस्थित थे।

इस समारोह की खास बात यह रही की फूलों के गुलदस्ते के स्थान पर फूल के पौधे वाली गमलों से अतिथियों का स्वागत किया गया ताकि पर्यावरण के प्रति भी जागरूक हो सकें।











# मौसम कार्यालय, ग्वालियर

# प्रतियोगिताओं के विजेताओं की सूची

	हिंदी निबंध	हिंदी शुद्ध	कविता पाठ	मसौदा लेखन	वादविवाद-
		लेखन			
प्रथम	श्री अजीत कुमार	श्री अजीत कुमार	श्री अजीत कुमार	श्री अंशुल	श्री अंशुमान
	सिंह, वै. स	सिंह, वै. स	सिंह, वै. स	द्विवेदी, वै. स	श्रीवास्तव, वै. स
द्वितीय	श्री अंशुमान	श्री अंशुल	श्री अंशुमान	श्री अजीत कुमार	श्री अजीत कुमार
	श्रीवास्तव, वै. स	द्विवेदी, वै. स	श्रीवास्तव, वै. स	सिंह, वै. स	सिंह, वै. स
तृतीय	श्री जयदीप शर्मा,	श्री प्रसून पुरवार,	श्री सी .एस.	श्री प्रसून पुरवार,	श्री प्रसून पुरवार,
	वै. स	वै. स	रघुवंशी,	वै. स	वै. स
			एम.टी.एस.		
प्रोत्साहन-	श्री अंशुल द्विवेदी,	श्री आशीष	श्री अंशुल द्विवेदी,	श्री आशीष	श्री आशीष सिन्हा
1	वै. स	सिन्हा, वै. स	वै. स	सिन्हा, वै. स	वै. स
प्रोत्साहन-	श्री आशीष	श्री जयदीप	श्री प्रसून पुरवार,	श्री सी.एस.	श्री जयदीप शर्मा ,
2	सिन्हा, वै. स	शर्मा, वै. स	वै. स	रघुवंशी ,	वै. स
				एम.टी.एस.	



# मौसम कार्यालय अम्बिकापुर

दिनांक 3 से 17 सितम्बर 2019 तक कार्यालय में 'हिंदी पखवाड़ा' का कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम में विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गयीं जिसमें कार्यालय के सभी सदस्यों ने उत्साह के साथ भाग लिया। 3 सितम्बर 2019 को प्रातः 10 बजे कार्यालय के प्रभारी अधिकारी श्री एस के मंडल जी के द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर के कार्यक्रम का विधिवत शुभारम्भ किया गया। प्रतियोगिताओं की कड़ी में हिंदी श्रुतलेखन, हिंदी टंकण, वाद विवाद, स्वरचित कविता एवं कहानी पाठ, भाषण तथा हिंदी व्याख्यान को स्थान दिया गया। प्रतियोगियों को उनकी प्रस्तुति अनुरूप पारितोषिक भी प्रदान किये गए।

वाद-विवाद की प्रतियोगिता हेतु विषय रखा गया – ' इंटरनेट के उपयोग के सुपरिणाम और दुष्परिणाम '। इस प्रतियोगिता में मौसम विज्ञानी श्री ए एम भट्ट ने जहां इसके दुष्परिणामों के पक्ष में कमान संभाली तो प्र.आधि. श्री मंडल,वै सहा श्री बिन्यामीन लकड़ा ,श्री मनीष कुमार और श्री नोकराम पात्रे ने संयुक्त रूप से इसके सुपरिणामों के पक्ष में संयुक्त रूप से अपने तर्क रखे। परन्तु श्री भट्ट ने उनके सभी तर्कों का खंडन करते हुए प्रतियोगिता को अपने पक्ष में कर लिया । 'हिंदी भाषा की आवश्यकता क्यों' इस विषय पर भाषण की प्रतियोगिता में भी सभी सदस्यों ने अपने विचार रखे। श्री भट्ट जी ने हिंदी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और इस भाषा के जन सामान्य से रूबरू हो सकने की दक्षता पर सारगर्भित तथ्यों को सामने रखा। स्वरचित कविता पाठ की प्रतियोगिता में श्री एस के मंडल जी ने अपनी एक कविता का वाचन किया वहीं श्री ए एम भट्ट ने अपने स्वरचित अनेक कविताओं से हिंदी पखवाड़े के इस आयोजन का मान बढ़ाया । दिनांक 17.09.2019 को प्रभारी अधिकारी श्री मंडल जी के द्वारा पारितोषिक वितरण और समापन भाषण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न घोषित किया गया।





### मौसम कार्यालय, सागर

मौसम कार्यालय सागर में दिनांक- 01 से 14 सितम्बर-2019 तक हिन्दी पखवाडा का आयोजन किया गया। हिन्दी पखवाडा के अवसर पर राजभा हिन्दी से संबंधित विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया तथा दिनांक 14/09/2019 समापन समारोह के अवसर पर पुरस्कार प्रदान किये गये।

#### 1.निबंध प्रतियोगिता- दिनांक 05/09/2019

प्रथम पुरस्कार - श्री दिलीप सिंह- वै.सहा.

द्वितीय पुरस्कार - श्री आशिष कुमार श्रीवास्तव- वै.सहा.

तृतीय पुरस्कार - श्री वेंकटेष प्रसाद - वै.सहा.

### 2. हिन्दी टायपिंग प्रतियोगिता- दिनांक 10/09/2019

प्रथम पुरस्कार-श्री संजय बांगडे-मौ.वि. द्वितीय पुरस्कार-श्री दिलीप सिंह-वै.सहा. तृतीय पुरस्कार-श्री भगवानलाल-एम.टी.एस.

#### 3. वादविवाद प्रतियोगिता- दिनांक 10/09/2019

प्रथम पुरस्कार-श्री अमित सिन्हा-वै.सहा. द्वितीय पुरस्कार-श्री संजय बांगडे-मौ.वि. तृतीय पुरस्कार-श्री आशिष कुमार श्रीवास्तव-वै.सहा.





### मौसम कार्यालय बैरागढ़

मौसम कार्यालय बैरागढ़ में दिनांक 01 सितम्बर से 20 सितम्बर 2019 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। जिसमे कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़ चढ़ कर विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लिया। कार्यालय में किवता/ गीत, तात्कालिक भाषण, शुद्ध लेखन, हिंदी प्रश्नोत्तरी एवं निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गयी। कार्यक्रम का समापन दिनांक 20 सितम्बर 2019 को श्री जे.के.एस.यादव, वैज्ञानिक ई, प्रमुख अतिथि, कार्यक्रम की अध्यक्षता सुश्री ममता यादव, वैज्ञानिक सी तथा डॉ.जी. डी. मिश्रा हिंदी अधिकारी तथा श्री एस.के.डे, मौ.वि. ब की उपस्थिति में संपन्न हुआ। प्रतियोगिता में प्रतिभागियों को हिंदी दिवस 14 सितम्बर पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

#### तात्कालिक भाषण

प्रथम श्री ललित बंगारी वै.स. व्दितीय श्री अशफाक हुसैन मौ.वि.ए

#### शुद्ध लेखन

प्रथम श्री अमित गुप्ता ए वै.स. द्वितीय श्री बी .एन.राव एमटीएस

#### निबंध प्रथम

श्री बी.एल.जयसवाल मौ.वि.अ द्वितीय श्री योगेन्द्र भदौरिया मौ.वि.ब तृतीय श्री शरीफ खान एमटीएस

#### कविता/ गीत

प्रथम श्री जे पी विश्वकर्मा मौ.वि.अ द्वितीय काशी बाई गुर्जर एमटीएस



## मौसम कार्यालय इंदौर

मौसम कार्यालय इंदौर मौसम कार्यालय इंदौर में हिंदी पखवाड़ा 2019 समारोह पूर्वक मनाया गया। जिसमें हिंदी पखवाड़े के दौरान हिंदी टंकण, वाद-विवाद, श्रुतलेखन, हिंदी में तात्कालिक भाषण प्रतियोगिताएं आयोजित की गई थी एवं विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा:-

प्रतियोगिताएं	दिनांक	प्रथम	द्वितीय	तृतीय
हिंदी टंकण	06.09.19	एसवि.गुप्ता मौ.पी.	अमितेश यादव ,	पी ,गुप्ता.के.
		ए	वै.स.	वै.स.
वाद विवाद-	09.09.19	पी ,गुप्ता.के.	मुकेश यादव ,	बिरेन्द्र धाकड़ ,
		वै.स.	.एस.टी.एम	.स.वै
श्रुतलेखन	12.09.19	अमितेश यादव ,	बिरेन्द्र धाकड़ ,	एसगुप्ता.पी.
		.स.वै	वै.स.	मौएवि.
तत्कालिक	14.09.19	बिरेन्द्र धाकड़ ,	एसगुप्ता.पी.	मुकेश यादव ,
भाषण		वै.स.	मौएवि.	.एस.टी.एम





जब तक तुम दौड़ने का साहस नहीं. जुटाओंगे प्रतिस्पर्धा में जीतना तुम्हारे लिए असंभव बना रहेगा

- चाणक्य

# मौसम कार्यालय बिलासपुर

मौसम कार्यालय बिलासपुर द्वारा दिनांक 14/09/19 से 30/0919 तक हिंदी पखवाडा मनाया गया । सभी अधिकारी तथा कर्मचारियों ने इसमें बढ़-चढ़कर भाग लिया । इस अवसर पर विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया तथा सभी विजेताओं को नकद पुरस्कार राशि दिया गया।

### आयोजित प्रतियोगिताएं

1. कविता पाठ 2. तात्कालिक भाषण 3. निबंध लेखन 4. शुद्ध लेखन हिंदी पखवाडा का समापन दि. 30.09.19 को इस संकल्प के साथ किया गया की <u>"अधिक से</u> अधिक कार्य हिंदी भाषा में किया जाएगा I"





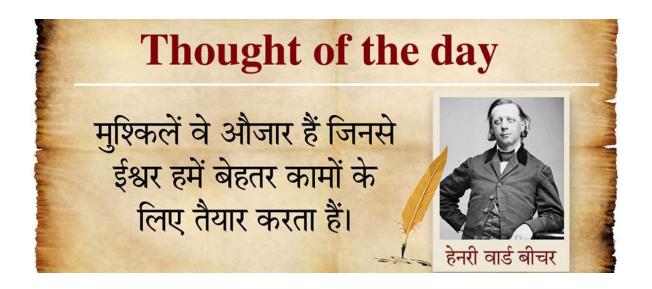
अंक 6

## मौसम कार्यालय जबलपुर

भारत मौसम विज्ञान कार्यालय जबलपुर में दिनांक 1 सितम्बर से 14 सितम्बर 2019 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया । इस दौरान निबंध लेखन, शुद्धलेखन, अनुवाद एवं तात्कालिक भाषण प्रतियोगिताएं आयोजित की गयी। सभी कर्मचारियों ने उत्साह के साथ आयोजन में भाग लिया। समापन समारोह में श्री आर.के.दत्ता मौ.वि.-ए ने सभी कर्मचारियों से अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने का आह्वान किया। प्रभारी अधिकारी द्वारा प्रतियोगिता में जीतने वाले कर्मचारियों को पुरस्कार भी वितरित किया।

निम्नलिखित अधिकारियों/कर्मचारियों ने हिंदी पखवाड़ा में भाग लिया :-

- 1.बी.जे.जेकब मौ.वि.-ए
- 2. डी.के.तिवारी, वै.स
- 3.प्रीतीश त्रिपाठी , वै.स
- 4.सुमित परोहा, वै.स
- 5. राहुल जैन, वै.स
- 6. मुकुल त्रिपाठी , वै.स
- 7. मयंक पाण्डे . वै.स
- 8. बी एम. बड़ेवा, एम.टी.एस
- 9.रामचरण, एम.टी.एस



## विशेष खबरें

### सर्वोत्तम कार्य के लिए

भारत मौसम विज्ञान विभाग की 145वीं स्थापना दिवस के अवसर पर मौसम कार्यालय नागपुर को उत्कृष्ट कार्य के लिए सम्मानित किया गया। मौसम कार्यालय के प्रभारी अधिकारी श्री बृजेश कनौजिया, वैज्ञानिक-सी ने पुरस्कार ग्रहण किया।



#### राजभाषा हिंदी में सर्वाधिक कार्य के लिए

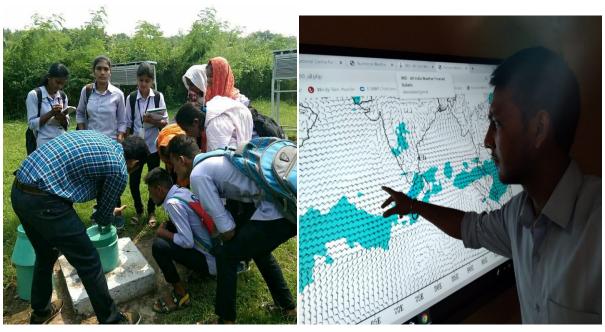
वर्ष 2019 में मौसम कार्यालय इंदौर को हिन्दी में सर्वाधिक कार्य के लिए राजभाषा शील्ड दी गई।



भारत मौसम विज्ञान विभाग द्वारा हैदराबाद में आयोजित सातवीं अखिल भारतीय हिंदी संगोष्ठी के अवसर पर प्रा.मौ.के.नागपुर की गृह पत्रिका ऋतुरंग के पांचवें अंक का विमोचन किया गया।



वीएनअईटी कॉलेज के एमटेक इंजीनियरिंग छात्रों को मौसम विज्ञान प्राचलों, रेडियो रेडियो सौंदे, रेडियो तरंग तथा पायलट बलुन प्रेक्षण के संबंध में श्री श्रेष्ठ गौतम, वै.स. ने जानकारी प्रदान की।



राजभाषा वार्षिक कार्यक्रमानुसार वर्ष के प्रत्येक तिमाही में कार्यशाला का आयोजन किया गया



केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो मुंबई द्वारा दिनांक 25.11.19 से 29.11.19 तक आयोजित पुनश्चर्या प्रशिक्षण कार्यक्रम में वरिष्ठ अनुवादक श्रीमती शांता उन्नीकृष्णन ने भाग लिया।





